Future Point

सरल
गृह वास्तु उपाय

लेखक
तिलक राज
वास्तु ऋषि व ज्योतिष महर्षि

प्रकाशक :
अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)
एच–1/ए, हौज़ खास, नयी दिल्ली–110016
फोन : 26569200–01, 26569800–01.
ईमेल– mail@aifas.com
वेब – www.aifas.com

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

सर्वाधिकार ©

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ

द्वितीय संस्करण 2005

संघ के पाठ्यक्रम के लिए विशेष रुप से प्रकाशित

प्रकाशक :

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)
एच–1/ए, हौज़ खास, नयी दिल्ली–110016
फोन : 26569200–01, 26569800–01.
ईमेल– **mail@aifas.com**
वेब – **www.aifas.com**

विषय सूची

पाठ सं.	पाठ	पृष्ठ संख्या
1.	विषय प्रवेश	1
2.	गृह वास्तु	6
3.	वास्तु और पर्यावरण	11
4.	वास्तु और ज्योतिष	17
5.	वास्तु दोषों से उत्पन्न कष्ट	19
6.	वास्तु दोषों के उपाय	25
7.	फेंग शुई के उपाय	51

Future Point

Future Point

"समर्पण"

सबसे पहले मैं उस परमपिता परमात्मा का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ जिसने मुझे ज्योतिष और वास्तु ज्ञान की ओर अग्रसर किया। उसके साथ ही माँ सरस्वती जी की वन्दना करता हूँ जिन्होंने मेरी लेखनी में वास किया। अपने धार्मिक, आध्यात्मिक व ज्योतिष गुरूओं की भी वन्दना करता हूँ जिनकी कृपा दृष्टि मुझ पर रही है। अपनी पूज्य माता स्वर्गीय श्रीमति रामचमेली जी को प्रणाम करता हूँ जिनकी गोद में बैठ कर पहला अक्षर ज्ञान प्राप्त किया। अपने पूज्य पिता स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी की असीम कृपा और स्नेह से ही मुझे आज जो भी ज्ञान है उसके लिए उन्हें कोटि कोटि प्रणाम है। परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से सृष्टि की रचना तथा पंचतत्वों का निर्माण करने वाले ब्रह्मा जी ने वास्तु विद्या की रचना की। वेदों और पुराणों की इस वास्तुविद्या के पारंगत श्री विश्वकर्माजी की कृपा का आकांक्षी, यह पुस्तक उन्हें ही समर्पित करता हूँ। देवराज इन्द्र के लिए अमरावती व प्रभु कृष्ण के लिए द्वारका का निर्माण करने वाले विश्वकर्मा जी को मेरा कोटि–कोटि प्रणाम है।

तिलक राज

Future Point

वक्र तुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभः।

निर्विध्नं कुरू में देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

"उद्देश्य"

इस पुस्तक का उद्देश्य पाठकों को वास्तु शास्त्र के प्राचीन व प्रचलित नियमों और सरल उपायों की जानकारी देना मात्र है। इस पुस्तक में दिए गए सामानों का प्रयोग व पूजा किसी योग्य व्यक्ति के निर्देशन में ही करें। इन सामानों के प्रयोग में उचित दिशा का भी ध्यान रखें। इनके सही प्रयोग से किसी भी प्रकार की हानि होने की कोई संभावना नहीं है। यदि किसी को किसी प्रकार की कोई हानि या क्षति पहुँचती है तो उसका दायित्व लेखक या प्रकाशक पर नहीं होगा।

Future Point

लेखक परिचय

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ द्वारा प्रथम ज्योतिष महर्षि व वास्तु ऋषि की उपाधियों से विभूषित श्री तिलक राज जी ज्योतिष के क्षेत्र में अपनी अलग ही पहचान रखते हैं। 20 वर्षों से इन विद्याओं के स्वाध्याय में लगे हैं। तीन साल से तो पूर्णरूपेण ज्योतिष कार्य ही कर रहे हैं। अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ के अन्तर्गत ज्योतिष की कक्षाएं प्रारम्भ करने में उनका बहुत योगदान रहा है। संघ के चैप्टर चेयरमैन तथा परीक्षा नियंत्रक होने के नाते संघ की सभी गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। फ्यूचर समाचार पत्रिका में भी उनके लेख प्रकाशित होते ही रहते हैं। देश विदेश में होने वाली घटनाओं का ज्योतिषीय विवेचन बहुत ही सरल और सटीक ढंग से करते हैं। भूकम्प भुज में ही क्यों? अमेरिका पर आतंकवादी कहर, भारतीय संसद पर आतंकवादी हमला, कोलंबिया अंतरिक्ष यान दुर्घटना आदि लेखों द्वारा ज्योतिष में शोध करते रहते हैं। ज्योतिष महर्षि पाठयक्रम के अन्तर्गत सौ से अधिक ज्योतिषियों की कुण्डलियों का अध्ययन करके ज्योतिषी बनने के योगों पर काम किया है। इन्टरनेशनल फेडरेशन ऑफ एस्ट्रोलोजी एण्ड स्पिरिचुअल सांइस के आजीवन सदस्य और दिल्ली चैप्टर के अध्यक्ष हैं। अन्तर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ के भी आजीवन सदस्य हैं। भगवद्गीता के प्रचार प्रसार के लिए निरंतर कार्यशील रहते हैं। ज्योतिष के साथ वास्तु, अंकशास्त्र और लाल किताब का भी ज्ञान रखते हैं। ''सरल उपाय विचार'' पुस्तक में ज्योतिष उपायों जैसे कठिन विषय को बहुत ही सुंदर व सटीक रूप से पेश करके बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। ''सरल वास्तु उपाय'' पुस्तक में वास्तु का समग्र अवलोकन करते हुए बहुत ही सरल और व्यवहारिक उपायों का समावेश किया है। हम उनकी उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करते हैं।

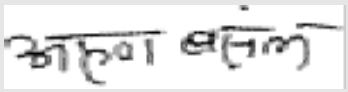

भूमिका

अथर्ववेद का एक उपवेद है स्थापत्य वेद। यह उपवेद ही हमारे वास्तु शास्त्र का आधार है। परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से ब्रह्मा जी को जब सृष्टि की रचना का कार्य सौंपा गया, तो ब्रह्मा जी ने अपने चारों मुखों से चार वेद उत्पन्न किए तथा वास्तु विद्या, धनुर्विद्या, चिकित्सा यानि आयुर्विद्या तथा संगीतविद्या की रचना की। वेदों में ज्योतिष से संबंधित कुल 242 श्लोक हैं। ऋग्वेद में 37, यजुर्वेद में 44 तथा अथर्ववेद में 162 श्लोक हैं। ये श्लोक ही ज्योतिष का आधार हैं। स्थापत्य वेद भी अथर्ववेद का ही एक भाग है। बिना ज्योतिष के वास्तु विद्या अधूरी है। वास्तु और ज्योतिष का चोली दामन का साथ है। वास्तु में मुहूर्त का भी बहुत महत्व है और बिना ज्योतिष के ज्ञान के आप मुहूर्त नहीं निकाल सकते।

वास्तु शास्त्र का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक आधार है। यदि आप वेदों पर और भगवान पर विश्वास करते हैं तो कोई कारण नहीं कि वास्तु पर विश्वास न करें। जिस प्रकार हमारा शरीर पंचमहाभूतों से मिल कर बना है, उसी प्रकार किसी भी भवन के निर्माण में पंच महाभूतों का पर्याप्त ध्यान रखा जाए तो भवन में रहने वाले सुख से रहेंगे। ये पंचमहाभूत हैं– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। हमारा ब्रह्माण्ड भी इन्हीं पंच तत्वों से बना है। इसीलिए कहा जाता है ''यथा पिन्ड तथा ब्रह्माण्डे''। भगवान ने हमें ये पाँच वस्तुएँ दी हैं भ से भूमि, ग से गगन अर्थात आकाश, व से वायु, ा (अ) से अग्नि और न से नीर अर्थात जल। भगवान को ॐ चिन्ह द्वारा भी रेखांकित किया जाता है। ॐ के प्रतिरूप अ से अग्नि उ से जल म से वायु,ँ अर्धचन्द्र से भूमि और ं शुन्य से आकाश इन पंच तत्वों का बोध होता है। इसी प्रकार वास्तु शब्द भी पंच तत्वों का बोध कराता है। व से वायु, ा (अ) से अग्नि, स से सृष्टि (भूमि), त से तत अर्थात आकाश और उ से जल।

जब पंच महाभूतों से शरीर बन जाता है तो मन, बुद्धि और अहंकार के सहित आत्मा का उसमें प्रवेश होता है। पंच महाभूतों के लिए पाँच ग्रहों को प्रतिनिधित्व दिया गया है। पृथ्वी के लिए मंगल, जल के लिए शुक्र, अग्नि के लिए सूर्य, वायु के लिए शनि और आकाश के लिए बृहस्पति को माना गया है। मन के लिए चन्द्रमा, बुद्धि के लिए बुध और अहंकार के लिए राहु को माना गया है। केतु मोक्ष का कारक है। जिस प्रकार शरीर में इन तत्वों की कमी या अधिकता होने से व्यक्ति रोगी हो जाता है, उसी प्रकार भवन में इन तत्वों की कमी, अधिकता या सही सम्मिश्रण के अभाव में उस भवन में रहने वालों को कष्ट होता है।

अक्सर यह प्रश्न उठता है कि वास्तु शास्त्र का प्रचलन पिछले कुछ वर्षों से ही क्यों बढ़ा है ? क्या उपायों से वास्तु दोषों को कम किया जा सकता है ? इस विषय में मेरा मत है कि जब से व्यक्तियों ने बहु–मंजिला फ्लैटों में रहना शुरू किया है तबसे उसके कष्ट बढ़े हैं, क्योंकि फ्लैट एक डिब्बानुमा घर की तरह बनते हैं जहां ब्रह्म स्थान खुला नहीं रखा जाता। सूर्य की गर्मी और वायु को घर में आने नहीं दिया जाता। कुछ लोग सुरक्षा के लिए दरवाजे और खिड़कियाँ बंद रखते हैं तो कुछ इसलिए कि कमरे और सामान गंदे न हो जाएं। पुराने मकानों में मकान के बीचो बीच खुला आंगन रखा जाता था जिससे चारों तरफ के कमरो में धूप, हवा और आकाश तत्व पहुँच सकें। जिस प्रकार व्यक्ति रोगी होने पर

Future Point

चिकित्सक के पास जाता है, उसी प्रकार भवन में वास्तु दोष होने पर वास्तु सलाहकार के पास जाने में कोई बुराई नहीं है। जिस प्रकार एक अच्छा चिकित्सक असाध्य रोग होने पर ही शल्य चिकित्सा की राय देता है, उसी प्रकार वास्तु में असाध्य दोष होने पर ही तोड़ फोड़ कर उसे सुधारने की सलाह दी जाती है। बिना तोड़ फोड़ किए केवल कुछ वस्तुओं को इधर–उधर करके, खाने और सोने की सही दिशा का चुनाव करके तथा पूजा पाठ द्वारा भी वास्तु दोषों का निवारण किया जा सकता है। सुख समृद्धि पाने के लिए फेंगशुई, पिरामिड, यंत्र–मंत्र आदि का भी सहारा लिया जा सकता है।

इस पुस्तक में वास्तु के संक्षिप्त विवरण के बाद उपायों के विभिन्न तरीकों का वर्णन किया गया है। उम्मीद करता हूँ कि यह पुस्तक वास्तु विद्यार्थियों तथा कार्यरत वास्तुविद्ों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ के अध्यक्ष श्री अरुण कुमार बंसल जी व वास्तुविद् आचार्य अवतार सिंह जी से प्राप्त हुई। उनका मैं हार्दिक आभारी हूँ।

तिलक राज
वास्तु ऋषि व ज्योतिष महर्षि
c/o शक्ति फ्यूचर पॉइंट
4, हरफूल सिंह बिल्डिंग,
घंटा घर, सब्जी मण्डी,
दिल्ली–110007
फोन : 23914114, 23934114

Future Point

Future Point

A house of complete Astrology Solutions

समग्र ज्योतिषीय समाधान

लियो गोल्ड

लियो पाम

आयोजन गतिविधियां

शिक्षा

पत्रिका फ्यूचर समाचार

प्रकाशन

परामर्श

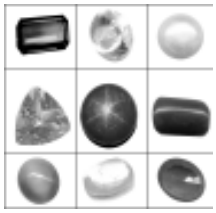

उपलब्ध सामग्री

वेब साईट

Future Point (P) Ltd

H-1èA, Hauz Khas, New Delhi-110016
Phone & Fax : +91-11-26569200-201, 26569800-801
E-mail : mail@futurepointindia.com Web : www.futurepointindia.com
www.futuresamachar.com, www.leogold.com, www.leopalm.com, www.aifas.com

Future Point

अध्याय–1
विषय प्रवेश

ब्रह्मा जी के मानस पुत्र श्री विश्वकर्मा जी ने जिस वास्तु शास्त्र को संसार के कल्याण के निमित्त विस्तार से कहा है उसी वास्तु शास्त्र के कुछ अंश इस पुस्तक में देने की कोशिश की गई है। प्रभु श्री कृष्ण जी ने मथुरावासियों के लिए एक नई नगरी बसाने का विचार किया, तो विश्वकर्मा जी को बुलाकर यह आज्ञा दी कि तुम समुद्र के बीच एक ऐसा नगर बसाओ, जिसमें मथुरावासी व ब्रजवासी सुखपूर्वक रह सकें। तब विश्वकर्मा जी ने वहाँ द्वारका नाम की ऐसी नगरी बसा दी, जिसका परकोटा सोने का बना हुआ था तथा सभी भवन स्वर्ण निर्मित एवं रत्न जड़ित थे। वापी, कूप, तालाब, सरोवर, उद्यान आदि सब बनाकर चारों वर्णों के रहने के लिए अलग–अलग स्थान बनाए तथा सेना, रथ, हाथी, घोड़े आदि के स्थान भी बना दिए। उस समय वरुण देवता ने श्याम वर्ण घोड़े, कुबेर ने श्रेष्ठ रथ और रत्न आदि एवं इन्द्र ने सुधर्मा नामक सभा को द्वारिकापुरी में पहुँचा दिया।

यह दृष्टांत यहां इसलिए दिया है कि विश्वकर्मा जी की कृपा हो जाए तो निर्माण कार्य में कोई बाधा नहीं आएगी। किसी भी नहर, दुर्ग, शहर, मकान, भवन, जलाशय व बाग के प्रारम्भ से पूर्व वास्तु पुरूष की पूजा का भी विधान है। वास्तु पुरूष का जन्म भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की तृतीया तिथि, शनिवार, कृतिका नक्षत्र, व्यतीपात योग, विष्टि करण, भद्रा के मध्य में, कुलिक मुहूर्त में हुआ। ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त वास्तु पुरूष की पूजा गृहारम्भ तथा गृहप्रवेश के समय की जाती है। वास्तु पुरूष के साथ गृहारम्भ करने वाले कारीगर को विश्वकर्मा का रूप समझ कर पूजा जाता है।

वास्तु शास्त्र का महत्व एवं उपयोगिता

हमारी प्रकृति में अनन्त शक्तियाँ हैं, जिससे सृष्टि, विकास और प्रलय की प्रक्रिया चलती रहती है। वास्तु शास्त्र में पंच महाभूतों के साथ प्रकृति की तीन शक्तियों पर विचार किया जाता है।

1. गुरुत्व शक्ति
2. चुम्बकीय शक्ति
3. सौर ऊर्जा

गुरुत्व शक्तिः पृथ्वी में आकर्षण शक्ति है जिसे गुरुत्वाकर्षण बल कहा जाता है। आकाश में स्थित चीजों को अपनी ओर खींचने के पृथ्वी के गुण को गुरुत्वाकर्षण शक्ति कहते हैं। जो वस्तु जितनी भारी

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

होगी, पृथ्वी उसे उतनी ही तेजी से अपनी ओर खींचती है। जो वस्तु हल्की होगी उसे पृथ्वी पर आने में समय लगेगा। पृथ्वी की इसी गुरुत्व शक्ति को ध्यान में रखकर यह निर्धारित किया जाता है कि अमुक भूमि किस प्रकार के निर्माण के लिए उपयुक्त है। जहाँ मिट्टी ठोस हो वहाँ भूमि की गुरुत्व शक्ति से भवनों को स्थायित्व मिलता है। जहाँ मिट्टी नरम हो या रेत का टीला हो वहाँ के भवन स्थायी नहीं होते।

चुम्बकीय शक्तिः हमारा पूरा ब्रह्माण्ड, उसमें स्थित ग्रह, नक्षत्र एवं तारे एक दूसरे से चुम्बकीय तरंगों से जुड़े हुए हैं। इन्हीं चुम्बकीय तरंगों के कारण ही सभी ग्रह, नक्षत्र व पृथ्वी आदि एक निश्चित दूरी पर रहते हुए ब्रह्माण्ड में गतिशील हैं। चुम्बक के दो ध्रुव होते हैं, उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव। उसी प्रकार हमारी पृथ्वी के भी दो ध्रूव हैं–उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव। चुम्बक के आकर्षण और विकर्षण से ही पूरा ब्रह्माण्ड गतिशील है। हमारा शरीर भी इन चुम्बकीय तरंगों से प्रभावित होता है। हमारा सिर उत्तरी ध्रूव और पैर दक्षिणी ध्रूव है। इसी वैज्ञानिक आधार के कारण व्यक्ति को सोते समय दक्षिण की ओर सिर करके सोने के लिए कहा जाता है, ताकि चुम्बकीय तरंगों के प्रवाह में रूकावट न आए और व्यक्ति को नींद अच्छी आए।

सौर ऊर्जा–पृथ्वी को मिलने वाली ऊर्जा का मुख्य स्रोत सूर्य है। सूर्य हमें प्रकाश और ऊर्जा देकर हमारे जीवन को गतिशील बनाता है। सूर्य की किरणें हर समय पृथ्वी के किसी न किसी भाग पर पड़ रही होती हैं। सूर्य की किरणें पृथ्वी के किस भाग पर किस कोण से पड़ रही हैं, उसी के अनुसार उन्हें तीन वर्गो में बाँटा जाता है। सुबह के समय पड़ने वाली किरणों को परा बैंगनी किरणें (Ultraviolet Rays), दोपहर को पड़नेवाली किरणों को वर्णक्रम प्रकाश (Direct Rays) तथा सायंकाल को पड़ने वाली किरणों को रक्ताभ किरणें (Infra Red Rays) कहते हैं। प्रातःकाल सूर्य की किरणों में गर्मी कम होती है। इस समय सूर्य की किरणों से हमें विटामिन डी प्राप्त होता है। वातवरण में मौजूद विषाणुओं को नष्ट करने की ताकत भी पराबैंगनी किरणों में होती है। जैसे–जैसे सूर्य की किरणों में लालिमा आती है वे असहनीय हो जाती हैं। इसी वैज्ञानिक आधार के कारण पूर्व को अधिक खुला रखने के लिए कहा जाता है ताकि सूर्य की किरणें सुबह के समय भवन के वातावरण को विषाणुओं से रहित करके जीवन के लिए लाभदायी ऊर्जा और ऊष्मा दे सकें। सूर्य की रक्ताभ किरणों से बचने के लिए ही पश्चिम में कम खिड़कियाँ रखी जाती हैं और बड़े वृक्ष भी पश्चिम में ही लगाए जाते हैं।

पंचमहाभूत

पंचमहाभूत से निर्मित शरीर को सुखमय और स्वस्थ्य रखने के लिए जिस भवन का निर्माण किया जाता है यदि उस भवन में भी अग्नि, भूमि, जल, वायु और आकाश तत्वों का सही ताल मेल रखा जाए तो वहाँ रहने वाले प्राणी शारीरिक, मानसिक व भौतिक रूप से सम्पन्न रहेंगे। जिस प्रकार शरीर में इन तत्वों की

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अधिकता या कमी होने से व्यक्ति रोगी हो जाता है उसी प्रकार भवन में इन तत्वों की कमी या अधिकता होने से वहाँ का वातावरण कष्टमय हो जाता है।

पृथ्वीः पृथ्वी के बिना आवास और जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पृथ्वी गुरुत्व शक्ति और चुम्बकीय शक्ति का केन्द्र है। इन्हीं शक्तियों के कारण पृथ्वी अपने धरातल पर बनने वाले भवनों को सुदृढ़ आधार देती है। वास्तु शास्त्र में भवन निर्माण के लिए भूमि की परीक्षा, मिट्टी की गुणवत्ता, भूमि की ढलान, भूखण्ड का आकार, प्रकार, भूमि से निकलने वाली वस्तुओं का शुभाशुभ विचार, भूमि तक पहुँचने के मार्ग व वेध आदि का विचार किया जाता है।

जलः पृथ्वी के बाद जल का नम्बर आता है क्योंकि जल ही हमारे जीवन का आधार है। अधिकतर बस्तियाँ समुद्र, नदी एवं झील के किनारों पर बसी हैं। शुद्ध जल के कई सात्विक गुण हैं। जल की अधिकता होने से बाढ़ आ जाती है और कमी होने से सूखा पड़ जाता है। वास्तु शास्त्र में जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए नल, बोरिंग, कुंआ, भूमिगत टंकी, भवन के ऊपर की टंकी, सेप्टिक टैंक, सीवेज, नाली, फर्श की ढलान, छत की ढलान आदि का विचार किया जाता है।

अग्निः अग्नि का प्रमुख स्रोत सूर्य है, जिसकी गर्मी, तेज और प्रकाश से पूरा विश्व व ब्रह्माण्ड चलाएमान है। सूर्य की सापेक्षता से पृथ्वी पर दिन और रात बनते हैं। ऋतुएँ परिवर्तित होती हैं। जलवायु में परिवर्तन आते हैं। वास्तुशास्त्र में भवन के अन्दर अग्नि तत्व के उचित ताल मेल के लिए बरामदा, खिड़कियाँ, दरवाजे, बिजली के मीटर, रसोई में अग्नि जलाने के स्थान आदि का विचार किया जाता है।

वायुः जिस प्रकार हमारे शरीर में वायु शरीर का संचालन करती है उसी प्रकार भवन में वायु स्वस्थ वातावरण का संचालन करती है। मानव के शारीरिक एवं मानसिक संतुलन को बनाए रखने के लिए भवन में खुली जगह, बरामदे, छत की ऊँचाई, द्वार, खिड़कियाँ व पेड़ पौधों का विचार किया जाता है।

आकाशः आकाश अनंत है। इससे शब्द की उत्पत्ति होती है। आकाश में स्थित ऊर्जा की तीव्रता, प्रकाश, लौकिक किरणें, विद्युत चुम्बकीय तरंगें तथा गुरूत्वाकर्षण शक्ति पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों पर भिन्न–भिन्न पायी जाती है। वास्तु शास्त्र में आकाश तत्व को महत्व देने के लिए ब्रह्म स्थान खुला रखने को कहा जाता है। छत की ऊँचाई, बरामदा, खिड़की और दरवाजों का विचार करके भवन में आकाश तत्व को सुनिश्चित किया जाता है।

भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पाँच तत्वों के उचित तालमेल से भवन के वातावरण को सुखमय बनाया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चाहता है। शरीर को चलाने के लिए अर्थ, बुद्धि को निर्मल रखने के लिए धर्म, मन को खुश रखने के लिए काम तथा आत्मा को मोक्ष चाहिए। पंचतत्वों का सही प्रयोग कर उन्हें अपने लिए सुखमय बनाया जा सकता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

दिशाएँ, ग्रह व देवता

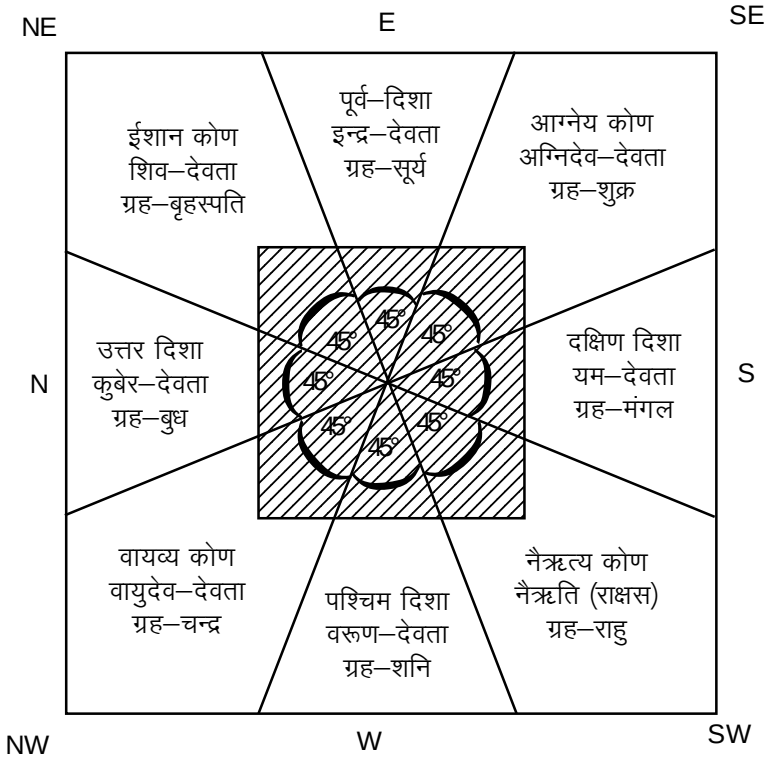

मुख्य द्वार का स्थान

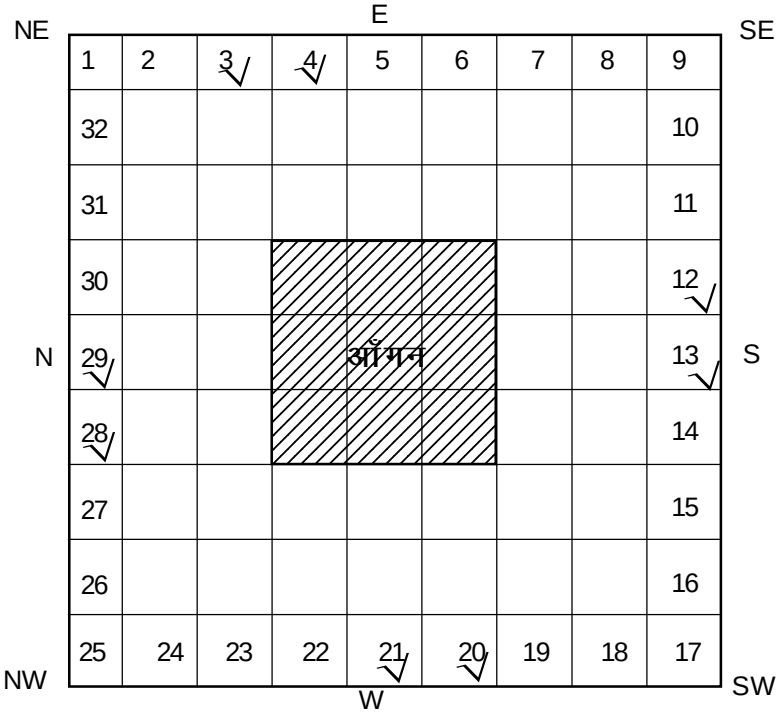

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

निम्न प्रश्नों के उत्तर दें :

1. वास्तु में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा क्या है? इसका क्या महत्व है? वर्णन करें।
2. वास्तु में पंचमहाभूतों का क्या महत्व है? वर्णन करें।
3. वास्तु में दिशाओं का क्या महत्व है? दिशाओं के देवताओं का वर्णन करें।
4. वास्तु पुरुष का जन्म कब हुआ था?
5. वास्तु चक्र के अनुसार मुख्य प्रवेश द्वार का निर्धारण कैसे होना चाहिए?

वास्तु देवता

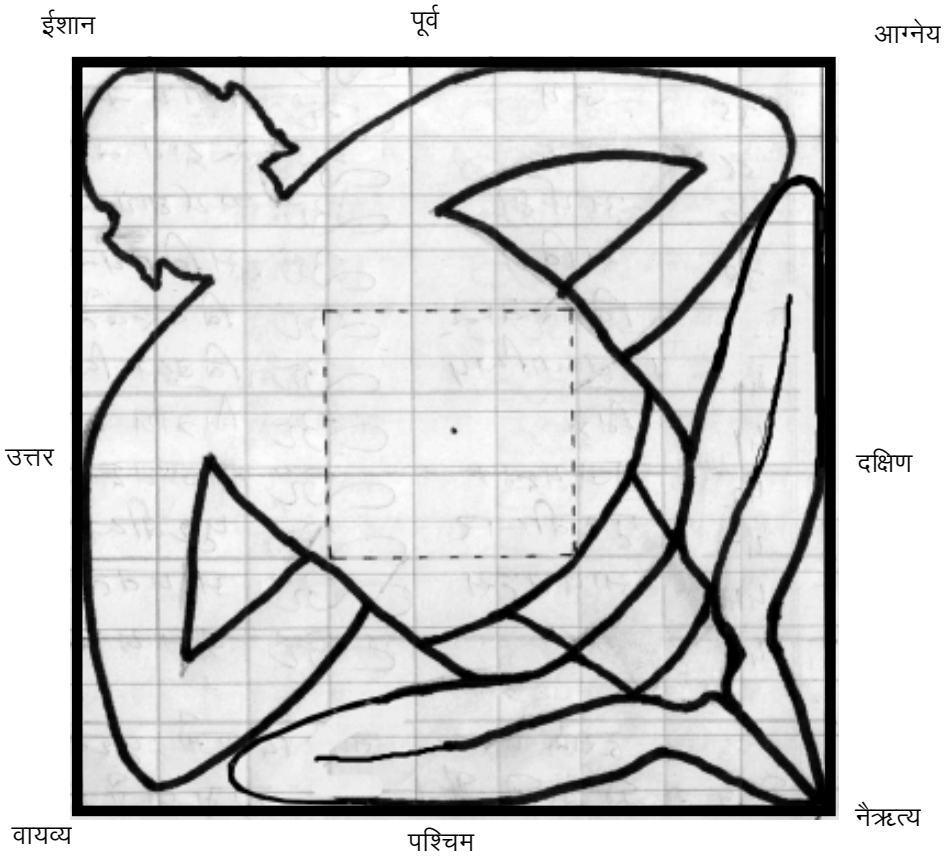

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

''वास्तु चक्र में देवताओं का स्थान''

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

''वास्तु चक्र में देवताओं का स्थान''
(अन्य मत)

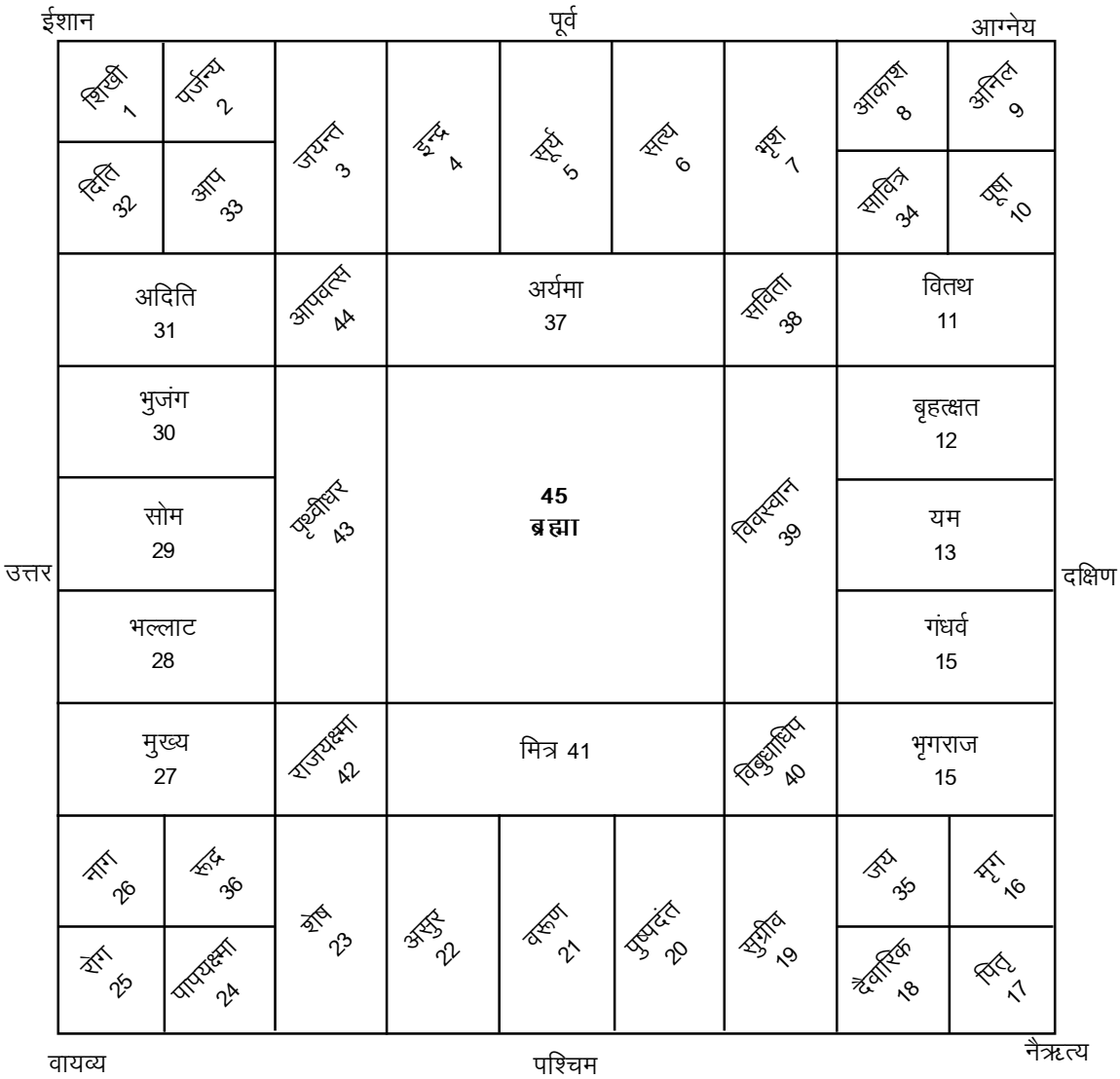

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

दिशा सूचक यंत्र प्रयोग विधि :

किसी भी भूखंड, मकान व स्थल का वास्तु निरिक्षण करने के लिए सबसे पहले उसके ब्रह्म स्थान का निर्धारण करें, फिर कम्पास लेकर ब्रह्म स्थान के मध्य में खड़े हो। कम्पास की सुई पर एक तरफ लाल रंग का निशान लगा होता है जो कि हमेशा उत्तर दिशा को इंगित करता है। किसी भी बिन्दु से आप 360^0 तक घूम सकते हैं। उत्तर दिशा को 0^0 मानकर घड़ी की दिशा में डिग्रियां बढ़ती है। अर्थात पूर्व दिशा 90^0 दक्षिण दिशा 180^0 व पश्चिम दिशा 270^0 पर होती है। चार मुख्य दिशाएं व चार उप दिशाएं है। उत्तर और पूर्व के मध्य में ईशान कोण, पूर्व व दक्षिण के मध्य में आग्नेय कोण, दक्षिण व पश्चिम के मध्य में नैऋत्य कोण व पश्चिम व उत्तर के मध्य में वायव्य कोण होता है। इन आठो दिशाओं को 45^0 का हिस्सा। अर्थात 45^0 के बिन्दु से $22½^0$ एक तरफ व $22½^0$ दूसरी तरफ का हिस्सा ईशान कोण ही कहलाएगा। $22½^0$ से $67½^0$ तक ईशान कोण ही है। इसी प्रकार सभी दिशाओं का समझा जाए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अध्याय–2
भूमि चयन

किसी भी वास्तु सम्मत निर्माण के लिए सबसे पहले आवश्यकता होती है, एक ऐसे भूखण्ड की, जो सब दृष्टियों से दोष रहित हो। भूखण्ड का चयन करते समय हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :

1. भूमि की आकृति
2. भूमि की ढलान
3. भूमि के कोण, कटाव व विस्तार आदि
4. भूमि तक पहुंचने के मार्ग
5. आस पास का वातावरण
6. भूमि परीक्षण व शुभाशुभ ज्ञानम्
7. भूमि दिशा विचार

1. भूमि की आकृति

गृह वास्तु में मकान बनाने के लिए वर्गाकार, आयताकार, वृताकार व गोमुखी भूखण्ड को शुभ माना गया है। अनियमित आकार के व अनियमित कोणों वाले भूखण्ड को अशुभ माना जाता है। प्लाट के सभी कोण 90^0 के हो तो उत्तम माने जाते हैं। आयताकार भूखण्ड सर्वोत्तम माना गया है।

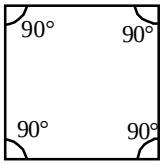

1. वर्गाकार प्लाट : जिस प्लाट की चारो भुजाएं समान हो और कोण 90^0 के हो तो वह वर्गाकार प्लाट माना जाता है। वास्तु के अधिकतर ग्रंथों में इसे शुभ माना गया है। किंतु ब्रह्मवैवर्त पुराण में कहा गया है कि इसमें रहने वाले गृहस्थों के धन का नाश होता है।

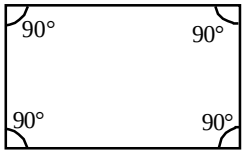

2. आयताकार प्लाट : जिस प्लाट में आमने सामने की दोनों भुजाएं समान हो और चारो कोण 90^0 के हो उसे आयताकार प्लाट कहते हैं। इसकी लंबाई व चौड़ाई में 1:2 से कम का अनुपात होना चाहिए। अर्थात लंबाई चौड़ाई से दुगुनी से कम रहे। चौड़ाई से दुगुनी या अधिक लंबाई होने पर गृहस्वामी के लिए विनाशकारक होती है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

3. वृत्ताकार प्लाट : वृत्ताकार प्लाट में मकान बनाना हो तो निर्माण भी वृत्ताकार ही होना चाहिए। वर्गाकार या आयताकार निर्माण करने से अशुभ माना जाएगा। ऐसे प्लाट बहुत कम देखने में आते हैं। (मतांतर से कुछ विद्वान इसे अशुभ ही मानते हैं।)

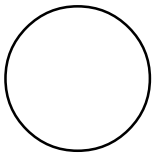

4. गोमुखी प्लाट : जो भूखण्ड गाय के मुख के आकार का हो उसे गोमुखी प्लाट कहते हैं। ऐसे प्लाट आगे से तंग व पीछे से बड़े होते हैं। इन्हें गृह वास्तु के लिए शुभ माना गया है। (मतांतर से ऐसे प्लाट पश्चिम मुखी व दक्षिण मुखी होने पर ही शुभ होते हैं , पूर्वमुखी व उत्तरमुखी होने पर ईशानकोण कटा हुआ माना जाएगा जो कि अशुभ है।)

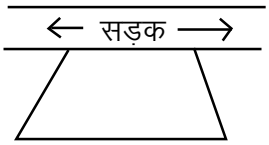

5. त्रिकोण भूखण्ड : गृह वास्तु में इसे अशुभ माना गया है। ऐसे भूखण्ड में रहने से व्यक्ति को राजभय होता है। मुकदमेबाजी हो सकती है व मानसिक कष्ट झलने पड़ सकते हैं।

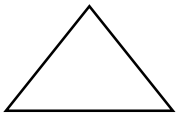

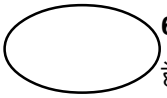

6. अंडाकार भूखण्ड : ऐसे भूखण्ड गृह वास्तु में तनावकारक व हानिकारक माने गये हैं। धार्मिक वास्तु व मंदिर आदि के काम में लाए जा सकते हैं।

7. सिंह मुखी भूखण्ड : सिंह मुखी भूखण्ड शेर के मुंह की तरह आगे से खुले व पीछे से तंग होते हैं। यह गृह वास्तु में अशुभ माने गए हैं लेकिन व्यवसायिक वास्तु में शुभ कारक है।

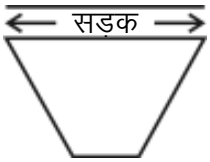

8. अर्धवृत्ताकर भूखण्ड : ऐसे भूखण्ड दरिद्रताकारक, भयकारक व अशुभ होते हैं।

9 ढ़ोलकनुमा भूखण्ड : ऐसे भूखण्ड अशुभ माने गए हैं। स्त्रीनाशक व विधुरता का कष्ट देने वाले हैं।

10. डमरू आकार भूखण्ड : ऐसे भूखण्ड में रहने से व्यक्ति की आंखों के लिए कष्टकारी व नुकसानदायक होते हैं।

11. छड़ आकार भूखण्ड : छड़ी की तरह लंबे व कम चौड़े भूखण्ड व्यक्ति को दुबला–पतला व कमजोर बनाते हैं व पशु धन की हानि होती है।

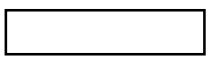

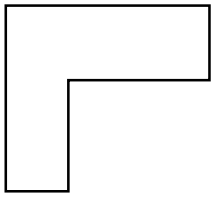

12. पंखाकार भूखण्ड : हाथ से झूलने वाले पंखे के आकार का भूखण्ड धन संपत्ति का नाशक होता है। व्यक्ति को धीरे–2 गरीब बना देता है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

13. धनुषाकार भूखण्ड : धनुष के आकार का भूखण्ड व्यक्ति को मूर्ख बनाता है। ऐसे व्यक्ति को पापी पुत्र की प्राप्ति होती है व चोरी का भय लगा रहता है।

14. कुम्भाकार भूखण्ड : घड़े के आकार का भूखण्ड व्यक्ति को कुष्ठ का रोग दे सकता है।

15. पंचकोणीय भूखण्ड : ऐसे भूखण्ड व्यक्ति के लिए क्लेश कारक होते हैं व गृह स्वामी के लिए मृत्युकारक है।

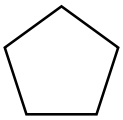

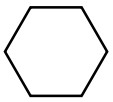

16. षटकोणीय भूखण्ड : ऐसे भूखण्ड व्यक्ति के लिए सुख व समृद्धिकारक माने गए हैं।

17. सप्तकोणीय भूखण्ड : सात कोणों वाला भूखण्ड सर्वदा अशुभ फलदायक है।

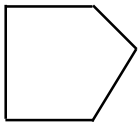

18. विषमबाहु भूखण्ड : असमान आकार वाली भुजाओं और असमान कोणों वाले विषमबाहु भूखण्ड शोक कारक, रोग कारक व धननाशक होते हैं।

2. भूमि की ढलान

भूमि की ढलान वास्तु में बहुत महत्व रखती है। यदि यह शुभ दिशा में न हो तो मकान बनाते समय इसे शुभ दिशा में कर लेना चाहिए। ढलान पूर्व, उत्तर और ईशान में शुभ मानी गई है, बांकि सब दिशाओं में अशुभ व कष्टकारी है। वास्तुशास्त्र में 26 प्रकार के भूखंड का उल्लेख आता है। उनमें से कुछ मुख्य–2 का यहां उल्लेख जरूरी है :

1. गोवीथी भूखण्ड : जो भूखण्ड पश्चिम से ऊंचा व पूर्व से नीचा हो वह गोवीथी भूखंड कहलाता है। ऐसे भूखंड पर वास करने से वंश की वृद्धि होती है।

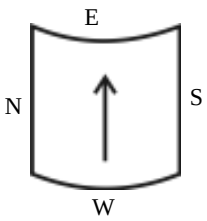

(नोट– ➔के निशान में नोक वाला भाग ढलान को दर्शाता है।)

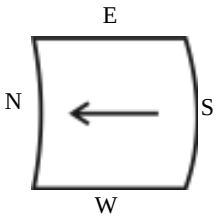

2. गणवीथी भूखण्ड : जो भूखण्ड दक्षिण से ऊंचा व उत्तर से नीचा हो, गणवीथी भूखण्ड कहलाता है। ऐसे भूखण्ड पर निवास करने से व्यक्ति निरोगी रहता है।

3. धनवीथी भूखण्ड : जो भूखण्ड नैऋत्य से ऊंचा व ईशान कोण से नीचा हो उसे धनवीथी भूखण्ड कहते हैं यह धन देने वाला लाभदायक भूखण्ड होता है।

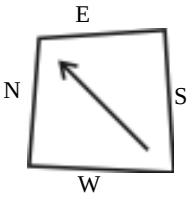

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

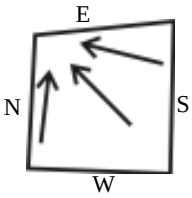

4. गजपृष्ठ भूखण्ड : जो भूखण्ड दक्षिण पश्चिम व वायव्य से ऊंचा हो और ईशान से नीचा हो उसे गजपृष्ठ भूखण्ड कहते हैं। हाथी की पीठ वाली इस भूमि में निवास करने से धन, लाभ व स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

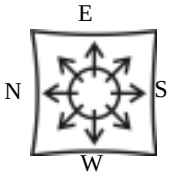

5. कूर्मपृष्ठ भूखण्ड : जो भूखण्ड मध्य से ऊंचा व अन्य सभी दिशाओं में नीचा हो तो ऐसा भूखण्ड कर्मपृष्ठ भूखण्ड कहलाता है। कछुए की पीठ वाली इस भूमि में निवास करने से धन–धान्य, सुख व उत्साह की वृद्धि होती है।

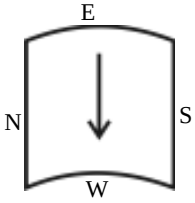

6. जलवीथी भूखण्ड : जो भूखण्ड पूर्व से ऊंचा व पश्चिम से नीचा हो जलवीथी भूखण्ड कहलाता है। ऐसी भूमि में निवास करने से वंश का नाश होता है।

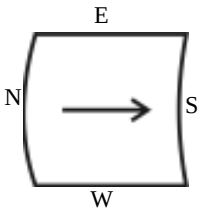

7. यमवीथी भूखण्ड : जो भूखण्ड उत्तर से ऊंचा व दक्षिण से नीचा हा यमवीथी भूखण्ड कहलाता है। ऐसी भूमि में निवास करने से रोगों की उत्पत्ति होती है।

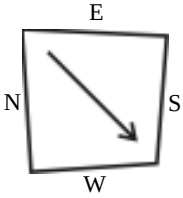

8. भूतवीथी भूखण्ड : जो भूखण्ड ईशान से ऊंचा व नैऋत्य से नीचा हो भूतवीथी भूखण्ड कहलाता है। ऐसी भूमि में निवास करने से भूत प्रेत बाधा व कष्टों की प्राप्ति होती है।

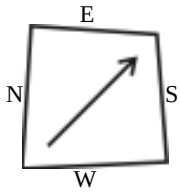

9. वैश्वानर वीथी भूखण्ड : जो भूखण्ड वायव्य से ऊंचा व आग्नेय से नीचा हो वैश्वानर वीथी भूखण्ड कहलाता है। ऐसे भूखण्ड पर निवास करने से अग्नि से भय उत्पन्न होता है और धन की हानि होती है।

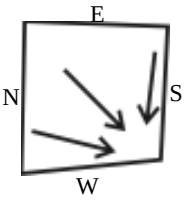

10. स्वमुख वास्तु : जो भूखण्ड आग्नेय, ईशान व वायव्य से ऊंचा व नैऋत्य से नीचा हो स्वमुख वास्तु कहलाता है। ऐसी भूमि पर निवास करने से रोगों की उत्पति व धन का नाश होता है।

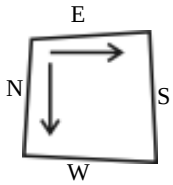

11. शंडूल वास्तु : जो भूखण्ड ईशान से ऊंचा, वायव्य व आग्नेय से नीचा हो शांडूल वास्तु कहलाता है। ऐसी भूमि में निवास करने से क्लेश की प्राप्ति होती है व अशुभ फल मिलते हैं।

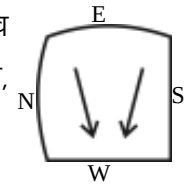

12. श्वमुख वास्तु : जो भूखण्ड आग्नेय व ईशान से ऊंचा व पश्चिम से नीचा हो श्वमुख वास्तु कहलाता है। ऐसी भूमि पर निवास करने से सुख, शांति व धन का नाश होता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

13. नागपृष्ठ वास्तु : जो भूखण्ड ब्रह्मस्थान से नीचा व सभी दिशाओं से ऊंचा हो नागपृष्ठ वास्तु कहलाता है। ऐसी भूमि में निवास करने से पुत्री को कष्ट, रोगों की वृद्धि, शत्रुओं से भय व सर्वनाश की प्राप्ति होती है।

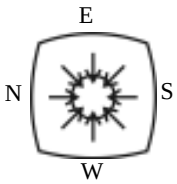

3. भूमि के कोण, कटाव व विस्तार

भूमि के सभी कोण 90^0 के हो तो अतिशुभ होता है। भूमि का कटाव नुकसानदायक होता है। भूमि का विस्तार पूर्व, उत्तर व ईशान में शुभ होता है बांकि दिशाओं में विस्तार अशुभ फलदायक होता है।

भूमि के कोण

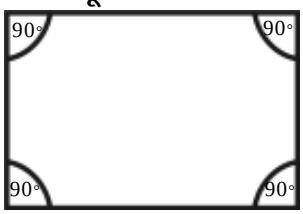

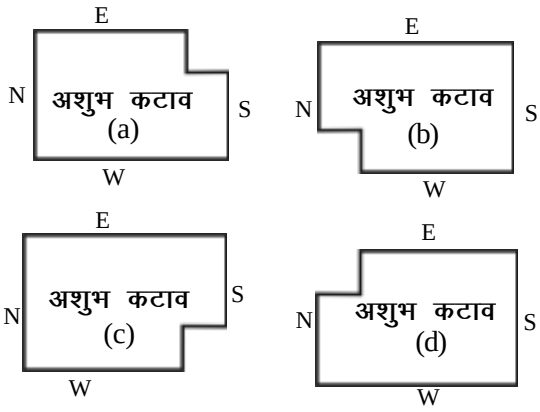

ऊपर वर्णित भूखण्ड (a) में आग्नेय कोण में कटाव है अर्थात शुक्र ग्रह पीड़ित है। ऐसे भूखण्ड में निवास करने से व्यक्ति के अपनी पत्नी के साथ संबंधों में तनाव, लड़ाई, झगड़ा, आर्थिक विपन्नता आदि कष्ट हो सकते हैं।

भूखण्ड (b) में वायव्य कोण में कटाव है। वायव्य कोण में कटाव होने से चंद्र ग्रह पीड़ित होता है। ऐसे भूखण्ड में निवास करने से मानसिक अशांति, अनिंद्रा, मित्रों व सहायकों की संख्या में कमी व सर्दी जुकाम आदि कष्ट हो सकते हैं।

भूखण्ड (c) में नैऋत्य कोण में कटाव है। नैऋत्य में कटाव होने से राहु ग्रह पीड़ित होता है। ऐसे भूखण्ड में निवास करने से स्थिरता की कमी, भूत–प्रेत बाधा, जादू टोना, अहंकार व रोग आदि कष्ट हो सकते हैं।

भूखण्ड (d) में ईशान कोण में कटाव है। ईशान में कटाव होने से गुरु ग्रह पीड़ित होता है। ऐसे भूखण्ड में निवास करने से धन हानि, पुत्र हानि, दुःख, पुजा में मन न लगना व गठिया आदि रोग हो सकते हैं।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

भूमि के विस्तार

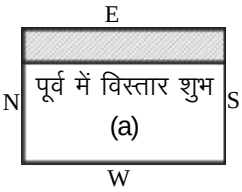

यदि आप के पास कोई भूखण्ड है और उसके साथ का भूखण्ड आप लेना चाहते हैं तो आप अपनी भूमि का विस्तार पूर्व दिशा में कर सकते हैं जो कि शुभ रहेगा। व्यक्ति को मान सम्मान व सुख समृद्धि प्राप्त होगी।

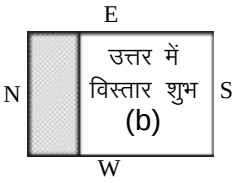

भूखण्ड (b) का विस्तार उत्तर दिशा में किया गया है जोकि शुभ रहेगा। व्यक्ति के धन की वृद्धि होगी। मित्रों व सहायकों से लाभ व सम्मान प्राप्त होगा।

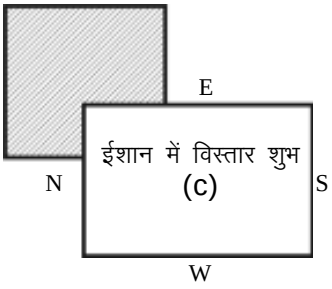

भूखण्ड (c) में विस्तार ईशान की ओर किया जा सकता है जो कि शुभ रहेगा। व्यक्ति को धन, पुत्र, धर्म व स्वास्थ्य का लाभ होगा।

4. भूमि तक पहुंचने के मार्ग

भूखण्ड के पूर्व और उत्तर दिशा में मार्ग होना शुभ माना गया है। भूखण्ड के चारों ओर मार्ग होना भी अत्यंत शुभ कहा गया है। इससे मुख्य द्वार शुभ पदों में किसी भी दिशा में बनाया जा सकता है।

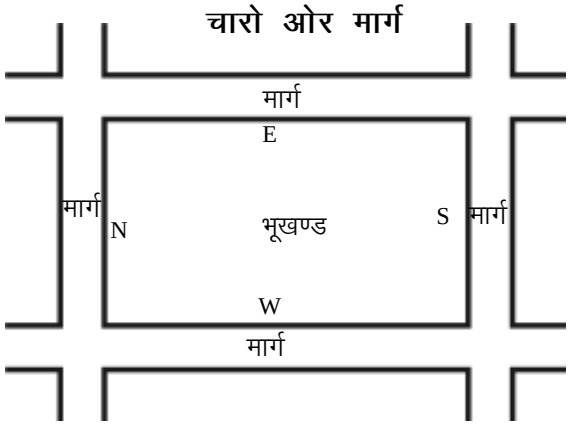

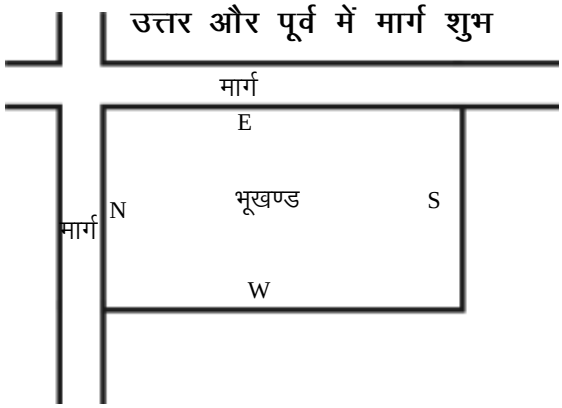

भूखण्ड के उत्तर और पूर्व में मार्ग होने से इन दिशाओं से आने वाली शुभ ऊर्जा की वृद्धि होती है। आम तौर पर मार्ग भूखण्ड से नीचे ही होते हैं, जिस कारण उत्तर और पूर्व के भाग नीचे होने से शुभ हो जाते हैं। यदि यही मार्ग दक्षिण व पश्चिम की ओर होंगे तो अशुभ हो जाएगें। क्योंकि पश्चिम और दक्षिण दिशा नीची व हल्की हो जाएगी।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

5. आसपास का वातावरण

भूखण्ड के दक्षिण या पश्चिम में ऊंचे भवन, पहाड़, टीले व पेड़ शुभ माने जाते हैं।

भूखण्ड से उत्तर या पूर्व की ओर कोई नदी या नहर हो और उसका प्रवाह उत्तर या पूर्व की ओर हो तो शुभ माना जाता है।

भूखण्ड के उत्तर, पूर्व या ईशान में भूमिगत जल स्रोत कुंआ, तालाब एवं बावड़ी शुभ मानी जाती है।

भूखण्ड दो बड़े भूखण्डों के बीच नहीं होना चाहिए।

भूखण्ड–1	भूखण्ड–2	भूखण्ड–3

भूखण्ड–2 के दोनों तरफ बड़े भूखण्ड है जिस कारण से यह भूखण्ड अशुभ माना जाएगा। ऐसे भूखण्ड में निवास करने वाला व्यक्ति हीन भावना से ग्रसित व दूसरों से दबा हुआ महसूस करेगा।

वास्तु वेध

आवासीय भूखण्ड के सामने कोई मंदिर, गडढ़ा, खंबा, शमशान घाट, टूटा फूटा मकान व भट्टी नहीं होनी चाहिए। ऐसे भूखण्ड पर निवास करने से व्यक्ति कई मुसीबतों से घिर जाता है। यदि घर के ऊपर मंदिर की परछाई पर रही हो तो गृह स्वामी को कष्ट भोगने पड़ते हैं। खंभा हो तो स्त्रियों में दोष, दासत्व व दुर्भाग्य की वृद्धि होती है। टूटा फूटा मकान हो तो शोक व धन हानि होती है। गडढ़ा हो तो कलह, विरोध व धन हानि होती है। शमशान घाट हो तो रोग, भूतप्रेत भय व पिशाचों से भय होता है। भट्टी हो तो पुत्र का नाश होता है।

भूखण्ड के ऊपर से बिजली की हाई वोल्टेज वाली तारें गुजरना अशुभ माना जाता है। बंद गली का आखिरी मकान नहीं खरीदना चाहिए।

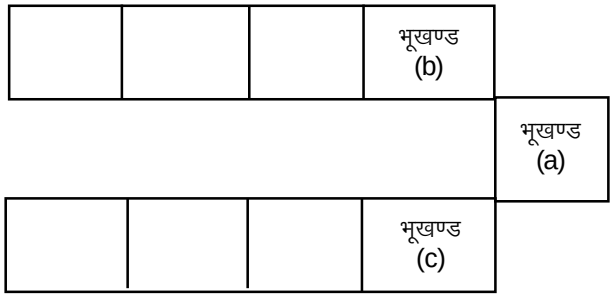

भूखण्ड (a) अशुभ माना जाएगा। ऐसा भूखण्ड नकारात्मक ऊर्जा का भंडार माना गया है। भूखण्ड (b) व (c) मध्यम माने जाएंगे। भूखण्ड के आसपास का वातावरण ऐसा होना चाहिए जहां खड़े होते ही मन को अच्छा लगे व संतुष्टि मिलें।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

6. भूमि परीक्षण व शुभाशुभ ज्ञानम्

1. सफेद रंग की सुगंधित मिट्टी वाली भूमि ब्राह्मणों के निवास के लिए श्रेष्ठ मानी गई है।
2. लाल रंग की कसैले स्वाद वाली भूमि क्षत्रिय, राजनेता, सेना व पुलिस के अधिकारियों के लिए शुभ मानी जाती है।
3. हरे या पीले रंग की खट्टे स्वाद वाली भूमि व्यापारियों, व्यापारिक स्थलों तथा वित्तिय संस्थानों के लिए शुभ मानी जाती है।
4. काले रंग की कड़वे स्वाद वाली भूमि अच्छी नहीं मानी जाती। यह भूमि शुद्रों के योग्य है।
5. मधुर, समतल, सुगंधित व ठोस भूमि भवन बनाने के लिए उपयुक्त है।
6. खुदाई में चीटी, दीमक, अजगर, सांप, हड्डी, कपड़े, राख, कोड़ी, जली लकड़ी व लोहा मिलना शुभ नहीं माना जाता।
7. भूमि की ढलान उत्तर और पूर्व की ओर शुभ होती है।
8. भूमि पर हरे–भरे वृक्ष, पौधे व घास आदि हो तो भूमि जीवित मानी जाती है। ऊबड़–खाबड़ व कांटेदार झाड़ियों वाली भूमि मृत मानी जाती है।
9. भूमि परीक्षण के लिए भूखण्ड में मध्य में डेढ़ फुट लंबा और डेढ़ फुट चौड़ा व डेढ़ फुट गहरा गड्ढा खोदे। फिर उस सारी मिट्टी को पुनः गड्ढ़े में भर दे। यदि मिट्टी फालतू बच जाए तो शुभ समझे। यदि मिट्टी कम पड़ जाए तो अशुभ समझे। इस विधि से मिट्टी के घनत्व की जांच की जाती है। नींव की गहराई का हिसाब लगाने के लिए मिट्टी के घनत्व की परीक्षा की जाती है ताकि वहां होने वाला निर्माण स्थाई हो व प्राकृतिक आपदाओं जैसे भूकंप आदि से रक्षा हो सके। रेतीली व पीली मिट्टी पर किया गया निर्माण स्थाई नहीं होता।
10. भूमि परीक्षण के लिए उपयुक्त विधि से गड्ढ़ा खोदकर उसमें पानी भर दे और सौ कदम चल कर वापिस आ जाए। लौटने पर यदि गड्ढ़े में उतना ही पानी हो तो भूमि श्रेष्ठ मानी जाती है। यदि पानी आधा रह जाए तो मध्यम व पानी आधे से कम हो जाए तो अशुभ मानी जाती है।
11. भूमि परीक्षण की एक अन्य विधि के अनुसार उपयुक्त प्रकार से गड्ढ़ा खोदकर उसे लीप पोतकर शुद्ध कर लें। फिर एक चार दिशाओं वाले दीए में धी भरकर चारों दिशाओं में चार बत्तियां जला दे और उसी गड्ढ़े में रख दें। यदि पूर्व की बत्ती अधिक समय तक जले तो वह भूमि ब्राह्मणों के लिए शुभ होगी यदि उत्तर की बत्ती अधिक समय तक जले तो वह भूमि क्षत्रियों के लिए शुभ होगी। यदि पश्चिम की बत्ती अधिक समय तक जले तो वह भूमि वैश्यों के लिए शुभ होगी। यदि दक्षिण की बत्ती अधिक समय तक जले तो वह भूमि शुद्र के लिए शुभ समझनी चाहिए।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

7. भूमि दिशा विचार

भूखण्ड की दिशाओं का निर्धारण करने के लिए भूखण्ड के ब्रह्म स्थान के बीचोबीच खड़े होकर कम्पास से दिशाएं देखें। यदि भूखण्ड की भुजाएं मुख्य दिशाओं के समानांतर हो तो शुभ होता है। अर्थात ईशान आदि कोण कोणें में ही आ रहे हो।

शुभ भूखण्ड

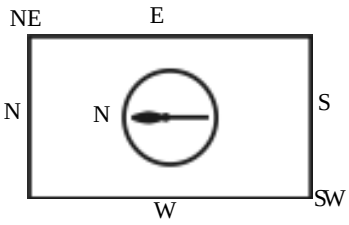

विदिशा भूखण्ड

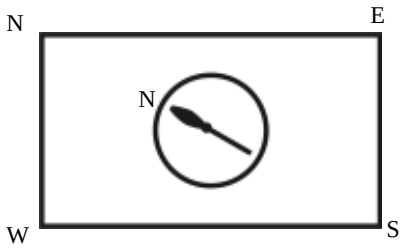

दिशाओं के समानांतर भूखण्ड होने से पृथ्वी को प्रभावित करने वाली चुम्बकीय तरंगें भूखण्ड के बीचोबीच प्रवाहित होगी जोकि नैसर्गिक संतुलन बनाते हुए भुखण्ड को बल प्रदान करेगी।

विदिशा भूखण्ड : यदि भूखण्ड की भुजाएं मुख्य दिशाओं के समानांतर नहीं होगी तो ईशान आदि कोण कोणों में नहीं आएंगे और भूखण्ड से निकलने वाली चुम्बकीय तरंगें संतुलन नहीं बना पाएगी इसलिए शुभ फलों में कमी आएगी। ऐसा भुखण्ड विदिशा भूखण्ड कहलाता है। इसे दिक्दोष भी कहते हैं।

वीथी शूल : भूखण्ड के समीप से निकलने वाले मार्ग यदि भूखण्ड पर एक तीर की तरह चुमते है तो वह वीथी शूल कहलाता है। इसे अशुभ माना गया है।

विथीशूल वाला भूखण्ड

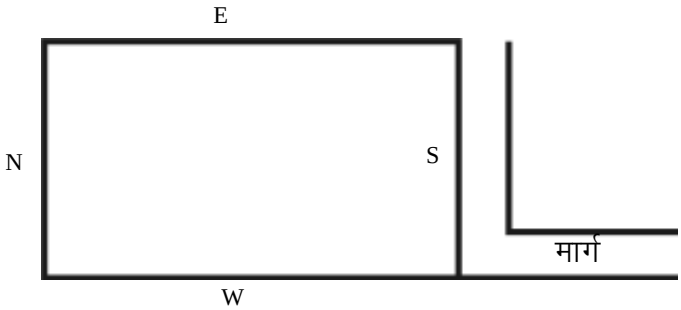

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अध्याय–3

निर्माण कार्य का आरंभ

निर्माण कार्य आरंभ करने से पहले निम्न बातों का ध्यान अवश्य रखें :

1. भूमि पूजन, नींव खनन, कुंआ खनन, शिलान्यास, द्वार स्थापन व गृह प्रवेश आदि कार्य शुभ मुहूत में ही करें।

2. कुंआ, बोरिंग व भूमिगत टंकी उत्तर, पूर्व या ईशान में बना सकते हैं। वास्तु पुरूष के अतिमर्म स्थानों को छोड़कर। मर्म स्थानों पर दीवार, कालम, बीम व द्वार आदि बनाने से बचना चाहिए।

   नीचे भूखण्ड के अति मर्म स्थान व मर्म स्थान दिखाए गए हैं। ब्रह्म स्थान में पांच अति मर्म स्थान होते हैं। चार ब्रह्म स्थान के चारो कोने व पांचवा ब्रह्म स्थान का मध्य। इसके अतिरिक्त 32 मर्म स्थान तारांकित छोटे चिन्हों से दिखाए गए हैं :

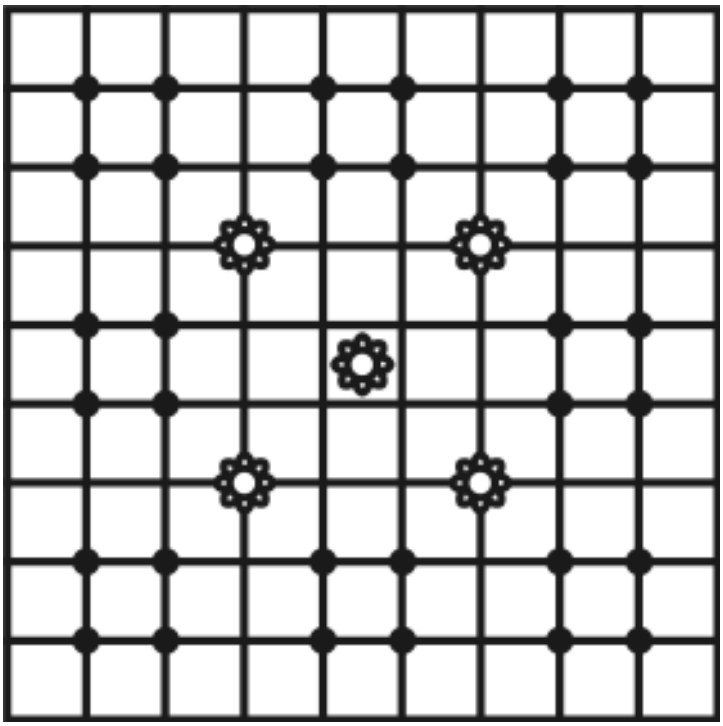

अति मर्म स्थान

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

3. भूखण्ड में मुख्य निर्माण चार दीवारी के साथ का पिशाच क्षेत्र छोड़कर करें। पूरे भूखण्ड को 81 भागों में बांट कर चार दीवारी के 32 भागों को खुले स्थान के रूप में छोड़ दिया जाता है। उससे अंदर के 24 भाग मनुष्य क्षेत्र के रूप में जाने जाते हैं। उससे अंदर के 16 भाग देव क्षेत्र के रूप जाने जाते हैं। बीच के 9 भाग ब्रह्म स्थान कहलाते हैं।

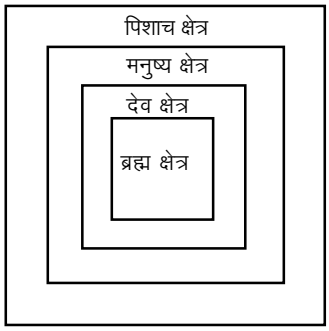

4. आवासीय भूखण्ड में बेसमेंट नहीं बनानी चाहिए। यदि बेसमेंट बनानी आवश्यक हो तो उत्तर, पूर्व और ईशान में ब्रह्म स्थान को बचाते हुए बनानी चाहिए। बेसमेंट की ऊंचाई कम से कम 9 फीट हो और 3 फीट तल से ऊपर हो ताकि प्रकाश व हवा आ जा सके।

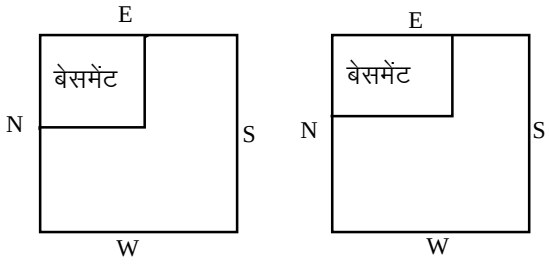

5. भवन का दक्षिणी भाग हमेशा उत्तरी भाग से ऊंचा होना चाहिए। भवन का पश्चिमी भाग हमेशा पूर्वी भाग से ऊंचा होना चाहिए। भवन में नैऋत्य सबसे ऊंचा और ईशान सबसे नीचा होना चाहिए। भूमि का स्तर मुख्य मार्ग से ऊंचा होना चाहिए।

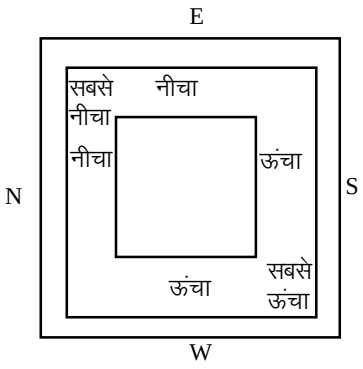

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

6. चार दीवारी के अंदर सबसे ज्यादा खुला स्थान पूर्व में छोड़े। उससे कम उत्तर में, उससे कम पश्चिम में, सबसे कम दक्षिण में छोड़ें।

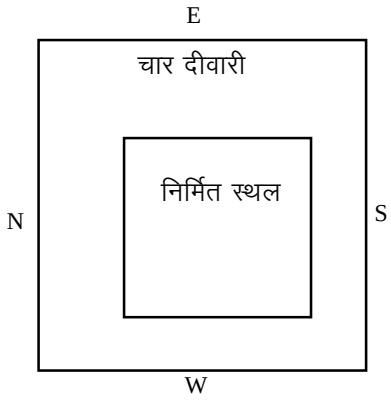

7. दीवारों की मोटाई सबसे ज्यादा दक्षिण में, उससे कम पश्चिम में, उससे कम उत्तर में, सबसे कम पूर्व में रखें।

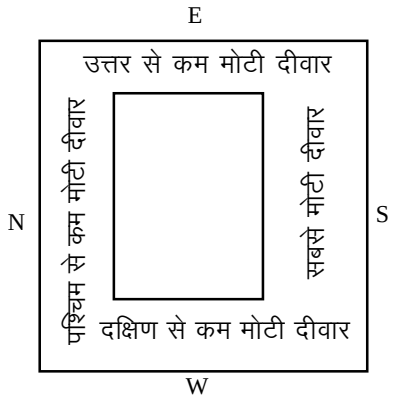

8. द्वार की चौड़ाई उसकी ऊंचाई से आधी होनी चाहिए। मुख्य द्वार सब द्वारों से बड़ा होना चाहिए।

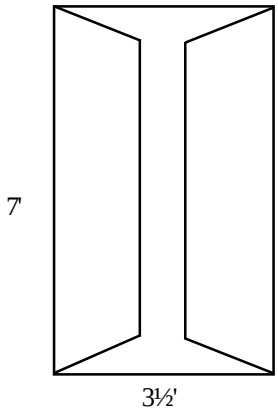

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

9. खिड़कियां व रोशनदान घर के उत्तर व पूर्व में अधिक तथा दक्षिण व पश्चिम में कम बनानी चाहिए।

10. ब्रह्म स्थान को खुला, साफ तथा हवादार रखना चाहिए। ब्रह्म स्थान पर जूठे बर्तन, चप्पल, कूड़ा–करकट व भारी सामान नहीं रखना चाहिए।

11. भवन में कक्षों की दिशा निम्न चित्र अनुसार रखें :

अष्ट दिशा गृह वास्तु

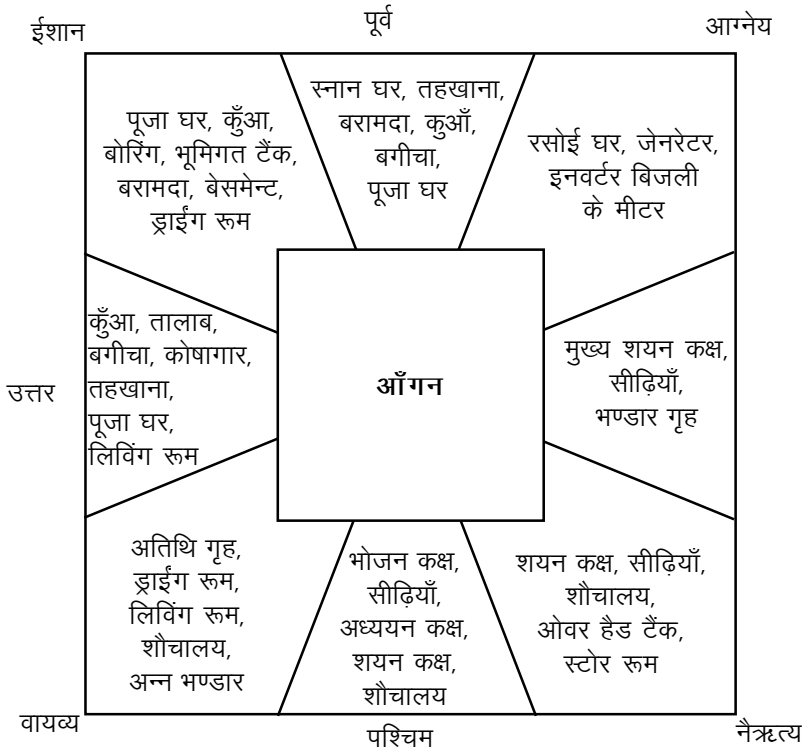

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

षोडशदिशा गृह वास्तु

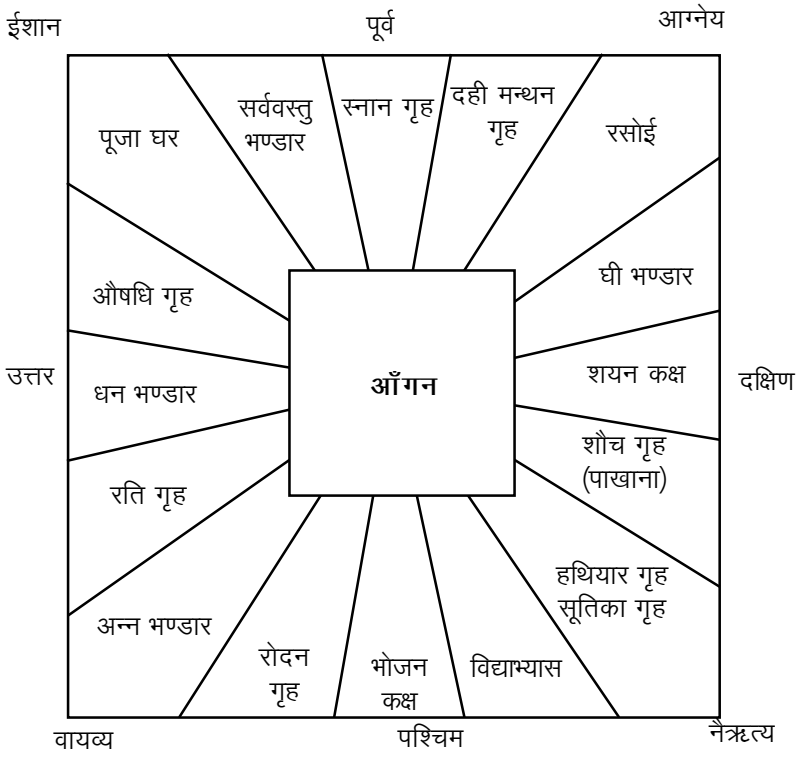

12. नींव की खुदाई के समय सौर मास बैसाख व फाल्गुन होने पर वायव्य कोण से खुदाई शुरू करें। सौर मास ज्येष्ठ व श्रावण होने पर नैऋत्य कोण से, सौर मास भाद्रपद व कार्तिक होने पर आग्नेय कोण से, सौर मास मार्गशीर्ष व माघ होने पर ईशान कोण से खुदाई शुरू करके परिक्रमा क्रम में खुदाई करनी चाहिए।

13. शिलान्यास के समय नींव में रखने योग्य पदार्थ नए व शुद्ध होने चाहिए। एक तांबे के लोटे में चावल भरकर रखें। 5 नई ईंटें, 5 प्रकार के रत्न, नाग–नागिन का जोड़ा, 5 कोड़ियां, 5 साबुत सुपारी, श्रीफल, तीर्थ स्थान की मिट्टी, गंगा जल व लाल रंग के वस्त्र की आवश्यकता पड़ती है।

14. गृहारंभ के समय 81 पद वाला वास्तु चक्र बनाकर 45 देवताओं की पूजा की जाती है। शुभ समय का निर्धारण करके प्रभु कृपा पाने के लिए पूजा–पाठ, हवन, गणेश पूजा, भूमि पूजा व वास्तु देव पूजा करनी चाहिए। गृहारंभ के समय आचार्य, ब्राह्मण, वास्तुकार व मिस्त्री आदि को विधिवत् संतुष्ट करें। ऐसा करने से घर में सदा सुख शांति रहती है। शुभ मुहूर्त के इंतजार में यदि गृहारंभ कार्य को देरी भी हो रही है तो इंतजार कर लेना चाहिए।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

15. भवन के सामने कोई वास्तु वेध या द्वार वेध हो रहा हो तो उसका विचार भी कर लेना चाहिए। भवन व मुख्य द्वार के सामने कोई अशुभ वृक्ष, मंदिर, खंभा, टूटा–फूटा मकान, गड्ढ़ा, श्मशान घाट, शिला, भट्टी व ओखली नहीं होनी चाहिए।

16. भवन के सामने से किसी ऊंचे भवन की छाया पड़ने से छाया वेध कहलाता है। इससे घर में आने वाली धूप व हवा में बाधा पड़ती है।

17. भवन के सामने वाले भवन का कोई कोना भवन को तीर की तरह चुभ रहा हो तो इमारत वेध कहलाता है।

18. भवन के सामने कोई कुंआ आदि होने से द्वार के सामने कीचड़ व जल आदि हो सकता है जो कि शुभ नहीं है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अध्याय–4

कक्षों की स्थिति व आंतरिक संरचना

जल स्रोत : जल ही जीवन है। जल के बिना न तो निर्माण कार्य हो सकता है न ही वहां निवास। वास्तुशास्त्र में जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए नल, बोरिंग, कुंआ, भूमिगत टंकी व भवन के ऊपर की टंकी आदि का विचार किया जाता है। कुंआ, बोरिंग व भूमिगत टंकी ब्रह्म स्थान को बचाते हुए उत्तर, पूर्व या ईशान में बना सकते हैं। भवन के ऊपर की टंकी (ओवर हैड वाटर टैंक) भवन के नैऋत्य में बनाना चाहिए। इससे नैऋत्य सबसे ऊंचा व भारी हो जाएगा। घर के बाहर से घर में प्रवेश करने वाला जल (सरकारी जल कनेक्सन) ईशान कोण से प्रवेश करे तो अति शुभ है।

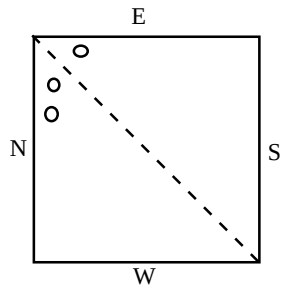

कुंआ व बोरिंग के शुभ स्थान

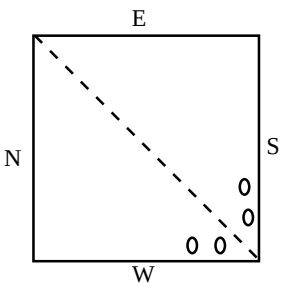

छत पर पानी की टंकी के शुभ स्थान

जल निष्कासन : जल निष्कासन के लिए भूमि की ढ़लान उत्तर और पूर्व की ओर शुभ होती है। छत की ढलान ईशान कोण की ओर होनी चाहिए। स्नान गृह व रसोई के पानी की निकासी उत्तर और पूर्व की ओर ही शुभ होती हैं यदि सेप्टिक टैंक बनाना आवश्यक हो तो वायव्य में बनाना चाहिए। सैप्टिक टैंक भवन की चार दीवारी से सटाकर नहीं बनाना चाहिए। यदि उत्तर दिशा में बेसमेंट बनी हो और वायव्य में सेप्टिक टैंक बनाना हो तो दोनों का फासला कम से कम 5 फीट होना चाहिए।

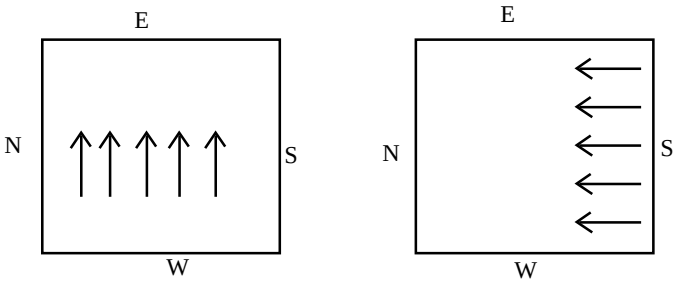

जल की निकासी की शुभ दिशा

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

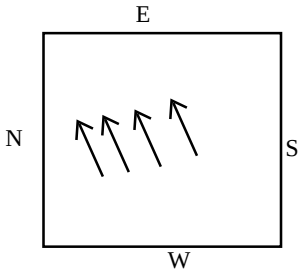

Future Point

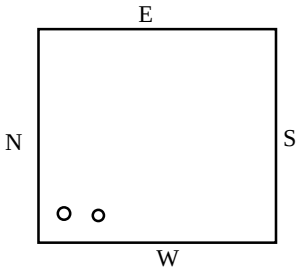

छत की ढलान की शुभ दिशा

सेप्टिक टैंक की शुभ दिशा

पूजा घर : पूजा घर के लिए सर्वोत्तम जगह ईशान कोण है। ईशान के अतिरिक्त पूर्व व उत्तर में भी बनाया जा सकता है। पूजा करते समय भी आप का मुंह उत्तर, पूर्व या ईशान की ओर होना चाहिए। घर के पूजा गृह में 9 ईंच से बड़ी मूर्तियां नहीं होनी चाहिए। बड़ी मूर्तियां मंदिरों में ही शुभ होती है। जहां कि उन्हें प्रतिदिन व बड़ी मात्रा में भोग लगता रहे। घर के मंदिर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्य प्रतिमा, तीन देवी प्रतिमा, दो गोमती चक्र व दो शालिग्राम नहीं रखने चाहिए। मंदिर कभी भी सीढ़ियों के नीचे नहीं बनाना चाहिए। मंदिर व शौचालय की दीवार एक नहीं होनी चाहिए। मंदिर व शौचालय साथ–2 या आमने–सामने नहीं होने चाहिए।

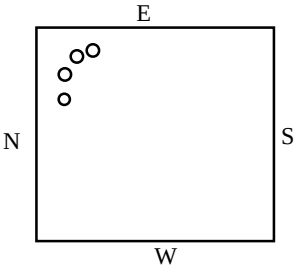

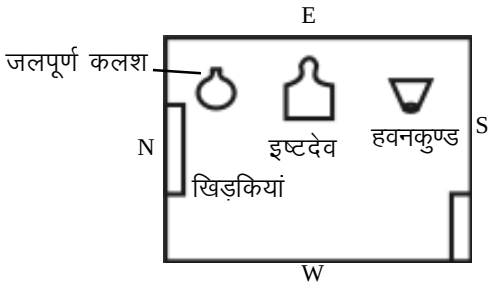

पूजा घर के लिए शुभ स्थान

पूजा घर की आंतरिक स्थिति

पूजा घर की आंतरिक स्थिति में देवी देवताओं के चित्र उत्तर या पूर्व में लगा सकते हैं। गंगा जल या जल पूर्ण कलश ईशान में रख सकते हैं। हवन करते समय हवन कुंड पूजा कक्ष के आग्नेय में रख सकते हैं। दीपक भी आग्नेय की तरफ रख सकते हैं। पूजा घर में क्रीम, पीला या सफेद रंग करा सकते हैं। फर्श सफेद रंग का हो सकता है। पूजा घर के नैऋत्य में एक अलमारी रख सकते हैं जिसमें पूजा से संबंधित सामान, व धार्मिक पुस्तकें, भगवान जी के वस्त्र आदि सामान रख सकते हैं। खिड़कियां उत्तर व पूर्व में होनी चाहिए। पूजा के आसन के ऊपर लकड़ी का पिरामिड लगा सकते हैं या पूजा घर की छत पिरामिडनुमा बना सकते हैं। ईशान कोण में लकड़ी के पिरामिड के नीचे बैठने से व्यक्ति का मन पूजा में लगता है और उसकी प्रार्थना की सुनवाई होती है। पूजा घर में कभी भी खण्डित मूर्तियां न रखें। पूजा घर को हमेशा साफ सुथरा रखें। पूजा घर कभी भी रसोई या शयन कक्ष में न बनाएं। पूजा घर बनाने के लिए अलग से कक्ष की व्यवस्था न हो सके तो पूर्व, उत्तर या ईशान के किसी कमरे में बना सकते हैं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

कोषागार : तन को स्वस्थ रखने के लिए रसोई घर का सही दिशा में होना जितना जरूरी है, धन की बढ़ोत्तरी के लिए कोषागार का सही दिशा में होना भी उतना ही जरूरी है। कोषागार हमेशा घर के उत्तर दिशा में होना चाहिए। उत्तर दिशा में कुबेर देवता का वास होता है जो कि धन की बढ़ोत्तरी में सहायता करते हैं। धन रखने की तिजोरी को उत्तर के कमरे में दक्षिण की दीवार के साथ रखें ताकि तिजोरी या अलमारी खोलते समय कुबेर देवता की दृष्टि उस पर पड़े।

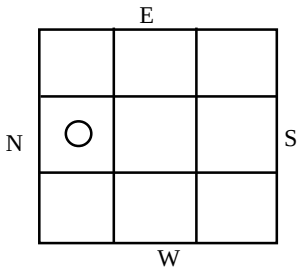

घर में कोषागार की सही स्थिति

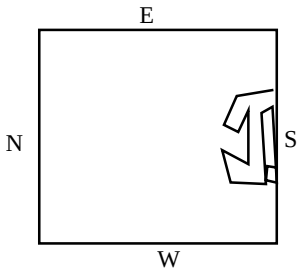

कोषागार में धन की अलमारी रखने की स्थिति

रसोई घर : स्वस्थ तन के लिए जरूरी है अच्छा भोजन। स्वादिष्ट व अच्छा भोजन बनाने के लिए रसोई घर का सही दिशा में होना बहुत जरूरी है। आग्नेय कोण अग्नि संबंधी कार्यों के लिए सर्वोत्तम स्थान है। रसोई घर बनाने की जगह यदि आग्नेय कोण में न बनती हो तो पूर्व में बना सकते हैं। पूर्व में भी जगह न बनती हो तो वायव्य में बना सकते हैं। वायव्य में रसोई घर बनाने से गृहणी का मन रसोई घर में टिकता नहीं है। घर में मेहमानों का आना जाना अधिक रहता है फलस्वरूप हर समय रसोई चलती रहती है। इससे घर के खर्च में वृद्धि होती है।

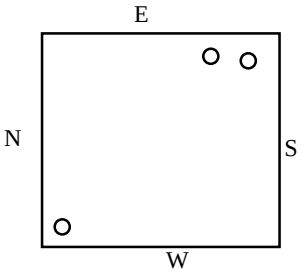

घर में रसोई की सही स्थिति

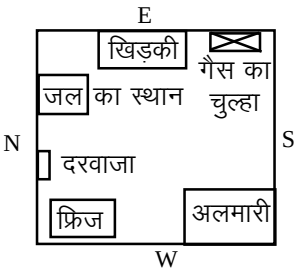

रसोई की आंतरिक संरचना

दिशा अनुसार रसोई घर का फल

आग्नेय	सर्वसुख, स्वास्थ्य व संपत्ति की प्राप्ति
दक्षिण	दुर्घटना की संभावना
पूर्व	मान्य, यश प्राप्ति

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

वायव्य	मान्य, पर खर्च में वृद्धि
ईशान	धन की हानि, अनिष्टकारी
नैऋत्य	लड़ाई झगड़े की वृद्धि, संबंधों में टकराव
उत्तर	स्वास्थ्य हानि, धन हानि
पश्चिम	उथल पुथल, कष्ट व भय की प्राप्ति

गृह स्वामी का शयन कक्ष : गृह स्वामी का शयन कक्ष ऐसा महत्वपूर्ण स्थान है जहां रह कर उसे सारे घर की व्यवस्था सुचारू रूप से चलानी है। व्यक्ति के जीवन का एक तिहाई हिस्सा (अर्थात दिन के 8 घंटे) शयन कक्ष में ही व्यतीत होते हैं। हमारे शास्त्रों में यह लिखा है कि व्यक्ति को सोते समय अपना सिर दक्षिण की ओर व पैर उत्तर की ओर करने चाहिए। इससे व्यक्ति को नींद अच्छी आएगी व उसका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। गृह स्वामी का शयन कक्ष दक्षिण की ओर होना चाहिए। कुछ वास्तुशास्त्री इसे नैऋत्य में बनाने की सलाह भी देते हैं। लेकिन यह देखा गया है कि नैऋत्य में मुख्य शयन कक्ष होने से व्यक्ति में अहंकार की भावना आ जाती है और वह घर के दुसरे सदस्यों को महत्व नहीं देता। नैऋत्य कोण के ग्रह राहु है इसलिए वहां सोने से अहंकार की भावना होना स्वभाविक ही है। दक्षिण दिशा अधिक उपयुक्त रहती है।

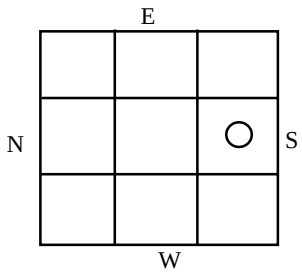

घर में मुख्य शयन कक्ष की सही स्थिति

शयन कक्ष के बारे में कुछ मुख्य सुझाव :

1. शयन कक्ष में डबल बैड कक्ष के नैऋत्य या दक्षिण में लगाया जा सकता है।
2. शयन कक्ष में यदि ड्रैसिंग टेबल लगानी हो तो उत्तर, पूर्व या ईशान में इस तरह लगानी चाहिए कि सोते समय आपके शरीर का कोई भाग शीशे में प्रतिबिंबित न हो।
3. शयन कक्ष के नैऋत्य, दक्षिण या पश्चिम में अलमारी लगा सकते हैं।
4. कूलर कक्ष के उत्तर या पूर्व में होना चाहिए, अगर ए.सी. (एयर कंडिशनर) लगाना हो तो वायव्य या दक्षिण में लगा सकते हैं।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

5. रूम हीटर या हीट कन्वेक्टर कक्ष के आग्नेय कोण में लगाना चाहिए।

6. सोते समय सिर दक्षिण की ओर सर्वोत्तम है। पूर्व में भी सिर रखा जा सकता है। उत्तर में सिर करके कभी नहीं सोना चाहिए। पश्चिम में सिर करके सोने से स्वप्न अधिक आते हैं व कई बार डरावने स्वप्न भी आ सकते हैं।

7. पलंग चरमराने वाले नहीं होने चाहिए।

8. शयन कक्ष में जूठे बर्तन व चप्पलों आदि का रैक नहीं होना चाहिए।

9. शयन कक्ष में पति पत्नी का संयुक्त चित्र होना शुभ होता है।

10. पलंग द्वार के एकदम सामने नहीं होने चाहिए।

11. पलंग के ऊपर कोई बीम आदि नहीं होना चाहिए।

12. शयन कक्ष दक्षिण में हो तो गुलाबी रंग करवाए और नैऋत्य में हो तो हल्का नीला या हल्का ब्राऊन रंग करा सकते हैं।

13. शयन कक्ष में मंदिर नहीं बनाना चाहिए। यदि इष्टदेव का कोई चित्र लगाना हो तो ईशान में लगा सकते हैं।

14. घड़ी पूर्व या उत्तर की दीवार पर लगानी चाहिए।

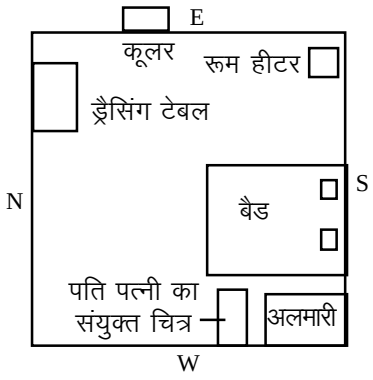

शयन कक्ष की आंतरिक संरचना

बच्चों के कमरे : घर की रौनक बच्चों से ही होती हैं बच्चों के कमरे सही दिशा में होने से उनका स्वभाविक तौर पर शारीरिक व मानसिक विकास होता रहता है। छोटे बच्चों के कमरे पूर्व व उत्तर दिशा में बना सकते हैं। बड़े बच्चों के कमरे पश्चिम में बना सकते हैं। विवाह योग्य पुत्री का कमरा उत्तर पश्चिम (वायव्य) में बना सकते हैं। इससे उसका विवाह बिना किसी बाधा के उचित समय पर हो जाएगा।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

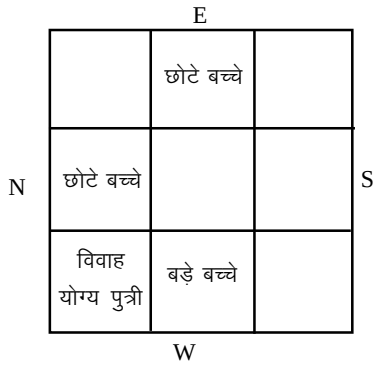

Future Point

घर में बच्चों के कमरों की सही दिशा

घर में बच्चों का अध्ययन कक्ष अलग से न होने की स्थिति में यदि बच्चों को अपने ही कमरे में पढ़ना है तो पढ़ने की टेबल उत्तर या पूर्व दिशा में लगा सकते हैं। बैड दक्षिण में इस प्रकार से लगाएं कि सोते समय सिर दक्षिण की ओर ही हो। ईशान कोण में गणेश जी व सरस्वती जी का चित्र लगा सकते हैं। अलमारी नैऋत्य में व कूलर उत्तर या पूर्व में लगाना चाहिए। पीछे शयन कक्ष संबंधी जो सुझाव दिए गए हैं उन्हें सभी सदस्यों के शयन कक्ष में लागु किया जा सकता है। बच्चों के कमरे में ही अध्ययन टेबल हो तो कमरे में हल्का हरा रंग करवाये, इससे बच्चों की बुद्धि तेज होगी व पड़ा हुआ याद रहेगा।

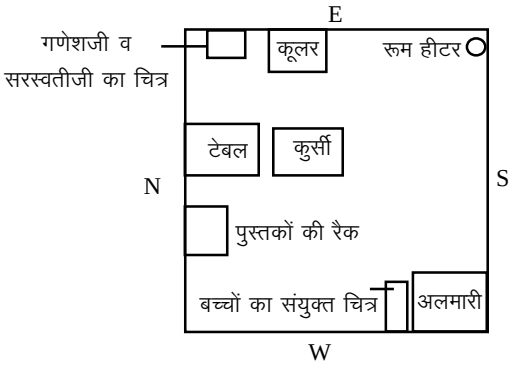

बच्चों के कमरे की आंतरिक सज्जा

अध्ययन कक्ष : बच्चों का अध्ययन कक्ष पश्चिम व नैऋत्य के मध्य में बनाया जाए तो अति उत्तम है। यहां अध्ययन कक्ष होने से बच्चे टिक कर बैठेंगे व पढ़ाई में उनका मन लगेगा। यहां जगह न होने पर उत्तर दिशा में भी बना सकते हैं। पढ़ते समय बच्चों का मुंह उत्तर या पूर्व की ओर होना चाहिए। वायव्य कोण में कभी भी अध्ययन कक्ष न बनाए। वर्ना बच्चे टिक कर पढ़ नहीं पाएंगे व बार–बार पढ़ाई छोड़कर बाहर आएंगे।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

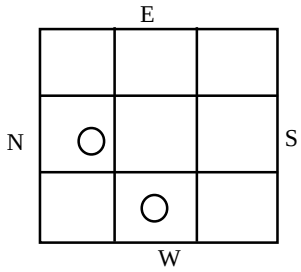

घर में अध्ययन कक्ष की सही दिशा

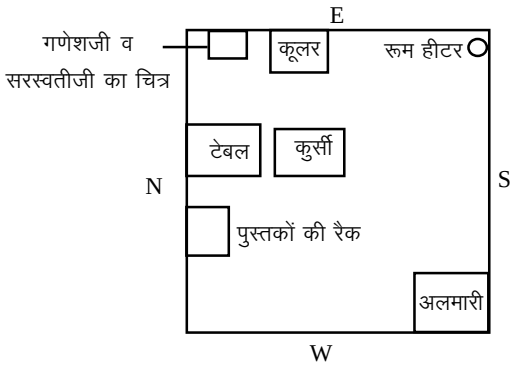

अध्ययन कक्ष की आंतरिक संरचना

अतिथि गृह : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जिस समाज में हम रहते हैं उसके साथ हमारे संबंध अच्छे बने रहे, इसके लिए आपस में मिलना जुलना बहुत जरूरी है। अतिथि का घर में आना सौभाग्य का सूचक समझा जाता है। अतिथि देवो भवः। अतिथि को देव तुल्य समझने वाले भाारतीय समाज में अब परिवर्तन आ रहा है। लोग कहते हैं कि अतिथि अगर ज्यादा दिन टिक गया तो हमारा बजट बिगड़ जाएगा। इसलिए अतिथि गृह वायव्य कोण में बनाना चाहिए। वायु तत्व की अधिकता के कारण अतिथि वहां ज्यादा दिन टिक नहीं पाएगा। अतिथि को यदि ईशान कोण में बिठा दिया जाए तो उसकी बहुत सेवा करनी पड़ेगी। नैऋत्य कोण में बिठाने से वह अधिक दिन तक टिकेगा और कई सलाहें देकर जाएगा।

अतिथि गृह की आंतरिक सज्जा अन्य शयन कक्षों की तरह ही की जा सकती है। वायव्य दिशा में सफेद रंग करवाना अच्छा रहता है।

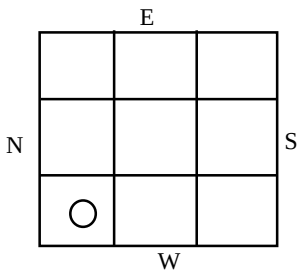

घर में अतिथि गृह के लिए उपयुक्त स्थान

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

भोजन कक्ष : भोजन कक्ष की सबसे उपयुक्त जगह पश्चिम दिशा है। पश्चिम दिशा के कमरे में बैठ कर भोजन इस प्रकार से करे कि आप का मुंह पूर्व या उत्तर दिशा की ओर रहे। आजकल ड्राइनिंग टेबल का रिवाज है। जिसके चारों ओर कुर्सियां लगा दी जाती है। इससे खाना खाने वालों का मुंह चारों दिशाओं में हो सकता है। पश्चिम व दक्षिण की ओर मुंह करके खाना खाना वास्तु सम्मत नहीं है। इसलिए कुर्सियां यदि इस प्रकार से लगाई जाए कि खाने वाले का मुंह उत्तर या पूर्व की ओर रहे तो अति उत्तम है। पुराने जमाने में जूते–चप्पल उतार कर पालथी मारकर खाना खाने की प्रथा थी। पश्चिम में भोजन कक्ष की जगह उपलब्ध न होने पर आग्नेय के साथ पूर्व व दक्षिण दिशा में भी भोजन कक्ष बना सकते हैं।

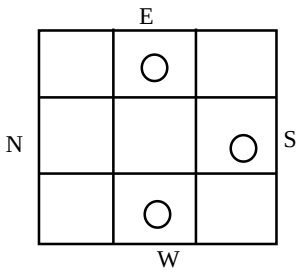

घर में भोजन कक्ष का उपयुक्त स्थान

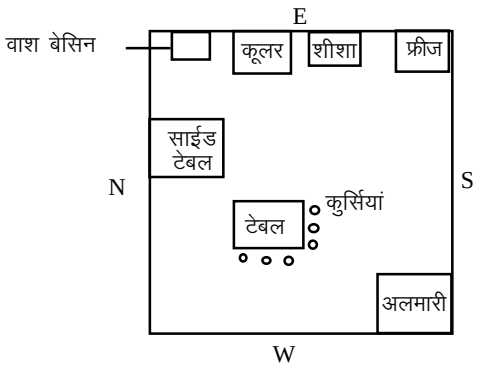

भोजन कक्ष की आंतरिक संरचना

बैठक (ड्राईंग रूम) : घर में बैठक वह स्थान है जहां परिवार के सभी सदस्य मिल जुलकर बैठ सके व परस्पर विचार विनिमय कर सके। आजकल बैठक का अधिकतर प्रयोग मेहमानों को बैठाने के लिए ही किया जाता है। धर में यदि ब्रह्म स्थान को कवर करना जरूरी हो तो उस स्थान को बैठक या लाबी के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। बैठक के लिए उत्तर, पूर्व व वायव्य दिशा का कमरा भी चुना जा सकता है। यदि ब्रह्म स्थान पर बैठक बनानी हो तो वहां पर भारी फर्नीचर नहीं रखना चाहिए। जूठे बर्तन आदि भी साथ के साथ उठा लेने चाहिए। ईशान कोण में ड्राईंग रूम बनाने से बचना चाहिए। यहां मेहमानों को बैठाने से उनकी बहुत सेवा करनी पड़ती है। बैठक में हल्के रंगों का ही प्रयोग करना चाहिए।

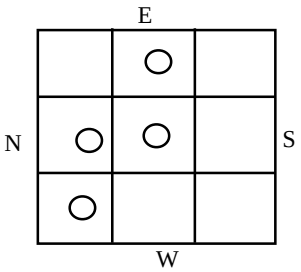

घर में बैठक के लिए उपयुक्त स्थान

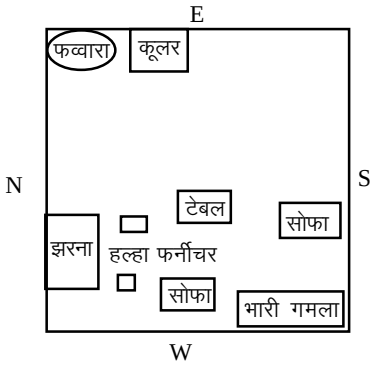

बैठक की आंतरिक संरचना

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

भंडार गृह : भंडार गृह से अभिप्राय उस स्थान से है जहां किसी वस्तु का संग्रह किया जाता है। घर में दूध–दही आदि का संग्रह पूर्व और आग्नेय के बीच में करना चाहिए। तेल व घी आदि का संग्रह आग्नेय व दक्षिण के बीच में करना चाहिए। खाने–पीने की अन्य वस्तुओं का संग्रह ईशान और पूर्व के बीच में करना चाहिए। गांवों में फसल कटने के बाद जब पूरे साल का अनाज इकट्ठा आ जाता है तो उसे वायव्य में संग्रह किया जाता है ताकि वह जल्दी से बिक जाए और घर धन से भर जाए। महलों इत्यादि हथियारों को रखने का स्थान नैऋत्य में बनाया जाता है। धन संग्रह करने का स्थान उत्तर दिशा में बनाया जाता है। घर का भारी सामान ट्रंक व अलमारियां आदि का स्टोर पश्चिम या नैऋत्य में होना चाहिए।

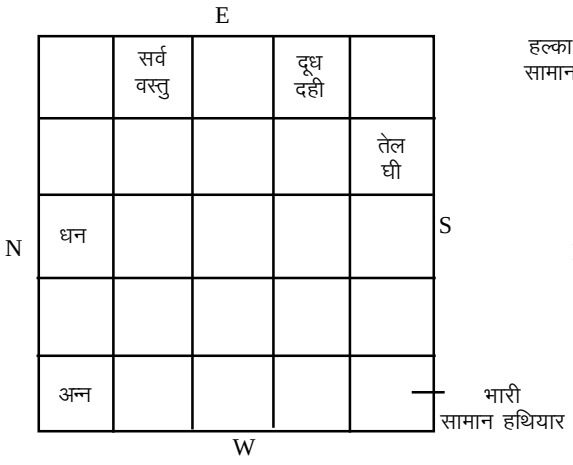

घर में भंडार गृह के लिए उपयुक्त स्थान

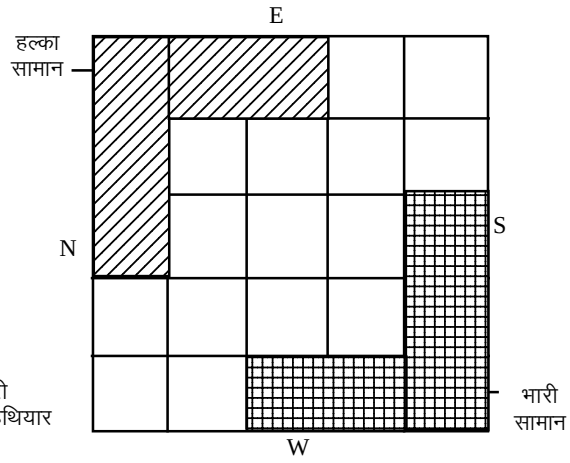

भंडार गृह की आंतरिक संरचना

शहरी जीवन के संदर्भ में, घर में एक ही स्टोर रूम बनाया जाता है। ऐसी स्थिति में नैऋत्य कोण उपयुक्त रहेगा। भंडार गृह की आंतरिक संरचना इस प्रकार रखें :

स्नान गृह : स्नान गृह के लिए सबसे उपयुक्त स्थान पूर्व दिशा है। पूर्व दिशा में स्थान न होने की स्थिति में उत्तर, ईशान या वायव्य में भी बनाया जा सकता है।

स्नान गृह में पनी के नल पूर्व या उत्तर में हो सकते हैं। गीजर आग्नेय में लागाएं। वाशिंग मशीन वायव्य में रखें। वाश बेसिन व दर्पण उत्तर में रखें। अलमारी दक्षिण या नैऋत्य में बना सकते हैं। जल की निकासी ईशान की ओर होनी चाहिए। घर का कोई भी नल टपकता हुआ नहीं होना चाहिए। समय–समय पर वाशर बदलवा लेनी चाहिए। स्नान गृह में शौचालय वास्तु सम्मत नहीं है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

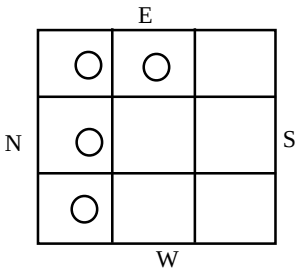

घर में स्नान गृह के लिए उपयुक्त स्थान

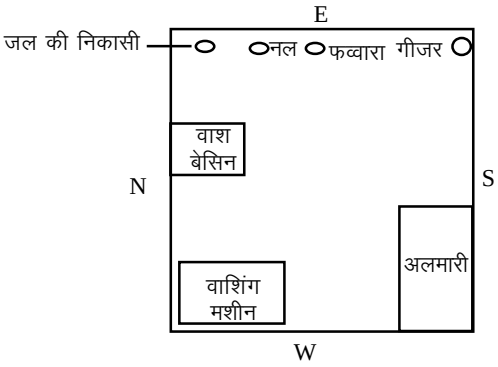

स्नान गृह की आंतरिक संरचना

शौचालय : वास्तु के नियमों के अनुरूप स्नान गृह व शौचालय पृथक–2 होने चाहिए। शौचालय के लिए उपयुक्त स्थान दक्षिण व नैऋत्य के मध्य में है। यदि एक से अधिक शौचालय बनाने हो या उपयुक्त स्थान पर न बन पाए तो वायव्य दिशा में भी बनाया जा सकता है। शौचालय कभी भी ईशान कोण या ब्रह्म स्थान पर नहीं बनाना चाहिए। शौचालय कभी भी मुख्य द्वार के सामने न बनाएं। शौच करते समय दिन में उत्तर की ओर व रात्रि में दक्षिण की ओर मुख्य होना चाहिए। यदि एक ही शौचालय बनाना हो तो इस तरह से बनाए कि शौच करते समय मुख उत्तर की ओर हो।

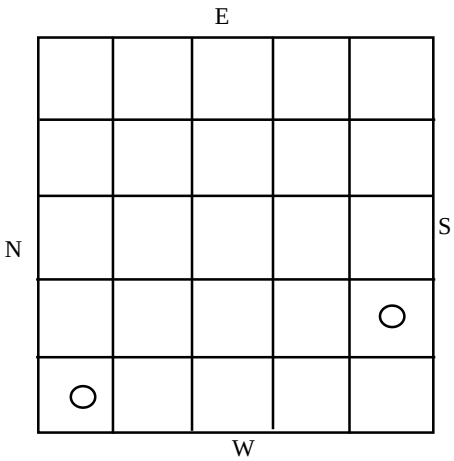

घर में शौचालय के लिए उपयुक्त स्थान

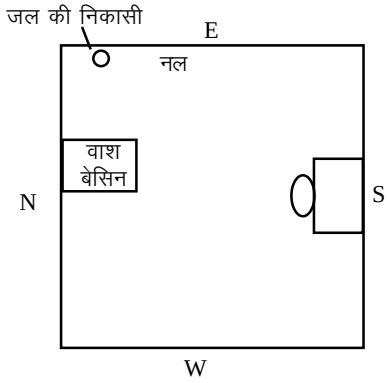

शौचालय की आंतरिक संरचना

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

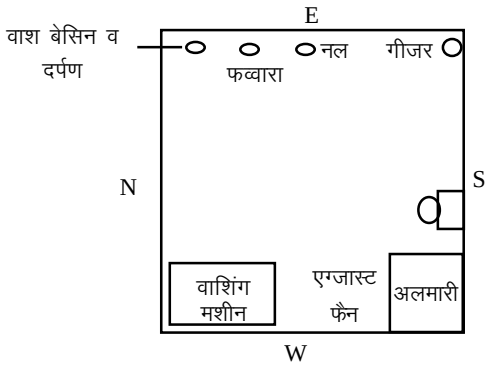

स्नान गृह की आंतरिक संरचना

सीढ़ियां : सीढ़ियों का स्थान घर में सबसे भारी व ऊंचा हो जाता है, अतः सीढ़ियां घर के दक्षिण, पश्चिम या नैऋत्य में ही बनानी चाहिए। सीढ़ियों का घुमाव हमेशा घड़ी की दिशा के हिसाब से ही होना चाहिए। सीढ़ियों के नीचे पूजा घर, शौचालय व रसोई धर नहीं होना चाहिए। आवश्यक होने पर स्टोर बनाया जा सकता है। सीढ़ियों की संख्या विषम होनी चाहिए। सीढ़ियों की संख्या को 3 से भाग देने पर शेष 2 बचे तो अति उत्तम है जैसे 5, 11, 17, 23 आदि। सीढ़ियां उतरते समय आपका मुख पूर्व या उत्तर की ओर हो तो शुभ है। गोल धुमावदार सीढ़ियां शुभ नहीं मानी जाती। मुख्य द्वार में एकदम सामने सीढ़ियां नहीं होनी चाहिए।

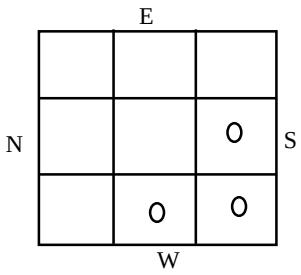

भवन में सीढ़ियों की उपयुक्त स्थिति

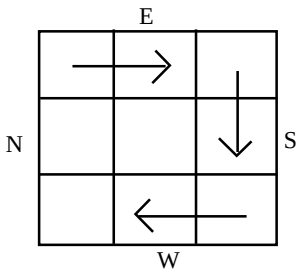

सीढ़ियां का घुमाव दाई दिशा में शुभ

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

गैराज : हल्के वाहनों को खड़ा करने के लिए आग्नेय कोण तथा भारी वाहनों को खड़ा करने के लिए वायव्य कोण में गैराज बनाया जा सकता है।

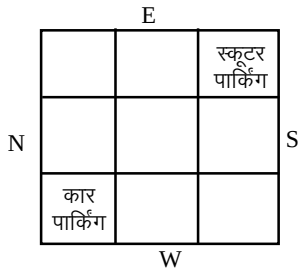

गैराज बनाने के लिए घर में उपयुक्त स्थान

बरामदा : बरामदा घर के उत्तर या पूर्व में हो तो अति शुभ रहता है। बरामदा वह स्थान है जहां हम हर आगंतुक का अनौपचारिक स्वागत करते हैं। यहां का वातावरण बहुत ही सौम्य, सुंदर व स्वागतमय होना चाहिए। यहां पर हल्का फर्नीचर व कुर्सियां आदि रखी जा सकती है। छोटे गमले व फूलों वाले पौधे यहां लगाए जा सकते हैं।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अध्याय–5

वास्तु सज्जा, रंग व वास्तु का सही प्रयोग

Future Point

निर्माण वास्तु सम्मत होने पर भी कई बार व्यक्ति को कष्ट होता है, तो उस स्थिति में यह पाया जाता है कि व्यक्ति उस घर का सही प्रयोग नहीं कर रहा होता। जैसे– गलत दिशा में सिर करके सोना, गलत दिशा की ओर मुंह करके कार्य करना, गलत कमरे में कार्य करना, किसी दिशा विशेष में उसके शत्रु ग्रहों से संबंधित सामान रखना, गलत दिशा में धन रखना, गलत दिशा में पूजा करना, गलत रंगों का प्रयोग करना, सज्जा वास्तु अनुरूप न करना, चित्रों आदि का गलत दिाा में लगाना आदि। इन प्रयोग संबंधी दोषों के भी कई बार बहुत भयंकर परिणाम देखने में आये हैं। प्रयोग, सज्जा व रंग संबंधी निम्न सुझावों को माने व सुखी जीवन पाएं :

1. पूजा घर ईशान कोण में ही रखें।
2. धन की तिजोरी का मुंह उत्तर दिशा में ही रखें।
3. रसोई आग्नेय कोण में बनाए।
4. खाना पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके खाएं।
5. मुख्य शयन कक्ष दक्षिण में बनाएं।
6. ईशान कोण में लोहे की अलमारी, लोहे का फर्नीचर व कवाड़ आदि न रखें।
7. ब्रह्म स्थान में जूठे बर्तन, चप्पल–जूते व कबाड़ न रखें।
8. सीढ़ियों के नीचे रसोई, शौचालय व मंदिर न बनाएं।
9. पूर्व, उत्तर व ईशान में पहाड़ों का चित्र न लगाएं।
10. पहाड़ों का चित्र दक्षिण, पश्चिम या नैऋत्य में लगाएं।
11. झरना, नदी, फव्वारा, मछली घर के चित्र या असली के पूर्व, उत्तर या ईशान में लगाएं।
12. खिड़की या दरवाजे की तरफ पीठ करके न बैठें न खाना बनाएं।
13. ईशान व पूर्व दिशा में कूड़ा–करकट, पत्थर व मिट्टी के टीले आदि न रखें।
14. उत्तर दिशा में गोबर के ढ़ेर न रखें।
15. पश्चिम व नैऋत्य दिशा में आग न जलाएं।
15. पूजा घर में हाथ से बड़ी मूर्तियां न रखें।
16. पूजा घर में हाथ से बड़ी मूर्तियां न रखें।
17. ड्राईंग रूम के शो केस में भगवान की मूर्तियां शो पीस बना कर न रखें। मूर्तियों को पूजा घर में रख कर बाकायदा उनकी पूजा करें।
18. घर में बंद घड़ियां न रखें, उन्हें चालू कराये या बेच दे।
19. बच्चों का अध्ययन कक्ष वायव्य में न बनाएं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

20. नौकरों को वायव्य में न ठहराएं।
21. नैऋत्य में मेहमानों को न ठहराए।
22. विवादों व मुकदमों के कागजात आग्नेय में न रखें।
23. घड़ियों को उत्तर व पूर्व की दीवार पर लगाएं।
24. मुख्य द्वार पर यदि गणेश जी का चित्र लगाना हो तो वैसा ही चित्र उस दीवार की अंदर की तरफ भी लगाएं।
25. घर में हिंसक जीव–जंतुओं के चित्र, उदासी वाले चित्र व युद्ध के चित्र न लगाएं।
26. ताजे फूल व नकली फूलों को भी घर में लगाने से वातावरण सुंदर व आनंददायक लगता है।
27. घर के सभी सदस्यों का एक संयुक्त चित्र पूर्व की ओर लगाएं।
28. दिवंगत पूर्वजों के चित्र दक्षिण दिशा में लगाएं।
29. घर का भारी सामान नैऋत्य दिशा में रखें।
30. घर के सभी दर्पण विभिन्न कक्षों के उत्तर या पूर्व की दीवार पर ही लगाएं।
31. दिशाओं के ग्रहों के अनुरूप उचित रंगों का प्रयोग उस दिशा के कक्ष में करें।

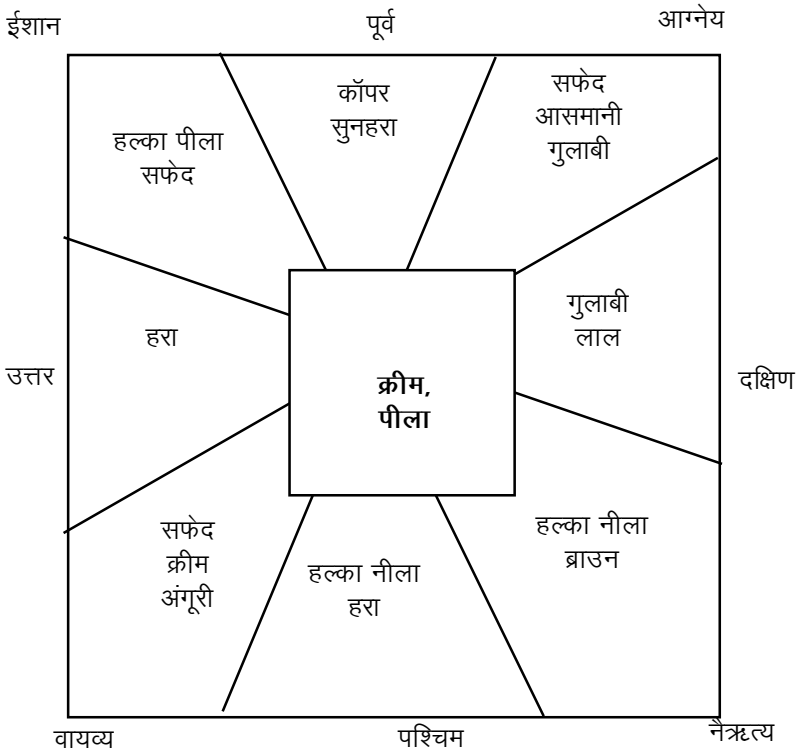

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अध्याय–6
पिरामिड द्वारा वास्तु दोष निवारण

पिरामिड एक विशेष प्रकार की आकृति का नाम है जिसके मय में अग्नि का वास है। अंदर से खोखला होने के कारण शुद्ध वायु को अपने अंदर एकत्रित रखता है, जिससे पिरामिड के नीचे वस्तुएं अधिक सय तक सुरक्षित रहती है। किसी दिशा विशेष में दोष होने पर उस दिशा में ऊर्जा को बएाने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। मनोकामना की पूर्ति एवं तंत्र इत्यादि में धातु व पत्थर के पिरामिड इस्तेमाल किए जाते हैं। किसी भी साधना में ध्यान को एकाग्रिचित करने के लिए पिरामिड का प्रयोग किया जाता है। लोहे, एल्युमिनियम व प्लास्टिक के पिरामिड पूजा में मान्य नहीं है। तांबा, पीतल एवं पंच धातु के पिरामिड अधिक लाभ देते हैं। लकड़ी के पिरामिड भी काफी प्रभावी रहत हैं। विभिन्न प्रकार के वास्तु दोषों में इनका प्रयोग किया जाता है। पिरामिड के कुछ उपयोग इस प्रकार है :–

1. दिक्दोष होने पर : यदि भूखण्ड की भुजाएं मुख्य दिशाओं के समानांतर नहीं हो तो ईशान आदि कोण कोणें में नहीं आते। ऐसे विदिशा भूखण्ड को दिकदोष वाला भूखण्ड कहते हैं। इस दोष को समाप्त करने के लिए भूखण्ड के मध्य में 9,81 या 729 पिरामिड भूखण्ड के आकार को मद्दे नजर रखते हुए दबाए जाते हैं।

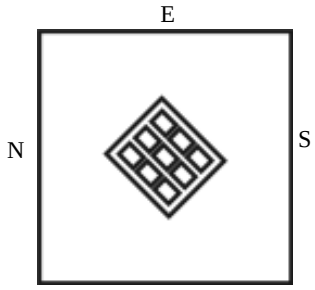

दिक्दोष होने पर

2. वीथी शूल होने पर : भूखण्ड के समीप से निकलने वाले मार्ग यदि भूखण्ड पर एक तीर की तरह चुमते हैं तो वीथी शूल कहलाता है। इस दोष को समाप्त करने के लिए भूखण्ड की उस दिशा में 9 पिरामिड लगाए जाते हैं जहां परवीथी शूल हो रहा हो। इन्हें दीवार में दबाया भी जा सकता है।

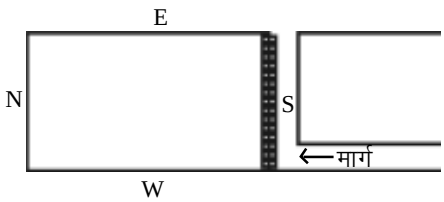

वीथी शूल होने पर

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

3. आकृति संबंधी दोष : भवन निर्माण के लिए आयताकार प्लॉट को अति शुभ माना जाता है। भूखण्ड में आकार संबंधी कोई भी दोष होने पर भूखण्ड के मध्य में 9,81 या 729 पिरामिड भूखण्ड के आकार को मद्दे नजर रखते हुए दबाए जाते हैं।

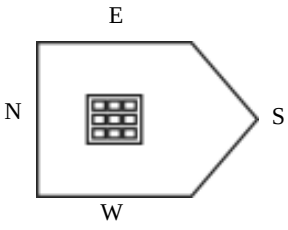

पहली विधि

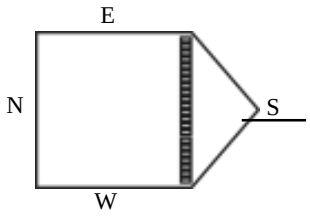

दक्षिण के विस्तार को 9 पिरामिड को दीवार से काट दिया है।

दूसरी विधि

उपरोक्त भूखण्ड में दक्षिण की ओर विस्तार है जो कि अशुभ है इसे दूसरी विधि में दिखाए गए 9 पिरामिडों की सहायता से अलग कर दिया गया है। निर्माण कार्य इस पिरामिड दीवार तक ही करना चाहिए। यदि पूरे में निर्माण करना हो तो मध्य में पिरामिड दबाए या नीचे तीसरी विधि को अपनाए :–

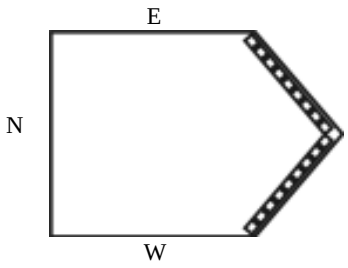

दोनों दिशाओं में 9–9 पिरामिड दबाएं

तीसरी विधि

उपरोक्त प्लाट के विषय में यह भी कहा जा सकता है कि इसका दक्षिण पूर्व व दक्षिण पश्चिम कटा हुआ है इस दोष को उपरोक्त विधि से ठीक किया जा सकता है। इन दो पिरामिड दीवारों से उस क्षेत्र में एनर्जी के फ्लो को बड़ा कर कटाव संबंधी दोषों के दुष्परिणाम को कम किया जा सकता है।

4. ढलान संबंधी दोष : उत्तर, पूर्व या ईशान की ओर ढलान न होने पर दोष माना गया है इस दोष को कम करने के लिए एक पिरामिउ ईशान में और 9 पिरामिड नैऋत्य कोण में रखें।

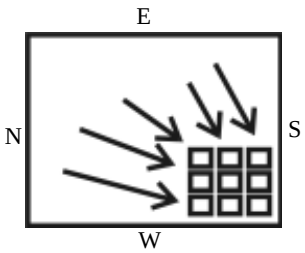

ढलान संबंधी दोष

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

उपरोक्त भूखण्ड में ढलान नैऋत्य कोण की ओर है अर्थात नैऋत्य नीचा व हल्का हो गया इसे भारी करने के लिए नैऋत्य में 9 पिरामिड व ईशान में केवल पिरामिड रखा गया है।

5. ब्रह्म स्थान संबंधी दोष : ब्रह्म स्थान नीचा होने पर दोष कहलाता है इस दोष को दूर करने के लिए ब्रह्म स्थान पर 9 या 81 पिरामिड भूखण्ड के आकार को मद्दे नजर रखते हुए दबाए जाते हैं। दबाने के लिए पीतल के पिरामिड अधिक उपयुक्त रहते हैं। 9 पिरामिड दबाने के लिए 1 फुट लंबा, 1 फुट चौड़ा व 1 फुट गहरा गड्ढ़ा करना चाहिए। पिरामिड की नोक ऊपर की ओर रहनी चाहिए।

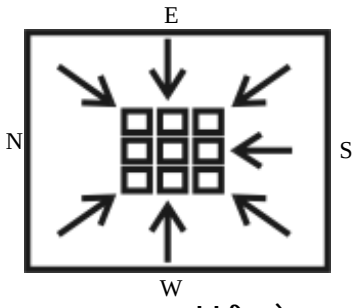

ब्रह्म स्थान संबंधी दोष

6. मुख्य द्वार संबंधी दोष : मुख्य द्वार अशुभ पदों पर होने की स्थिति में द्वार के तीनों तरफ एक–एक पिरामिड दबाया जा सकता है।

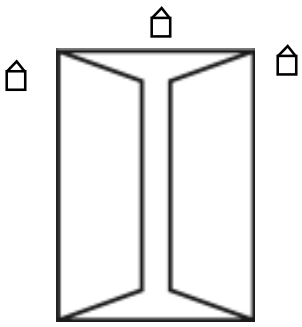

7. अग्नि कोण में जल संग्रह होने पर : इस दोष से अपने आपको बचाने के लिए जल संग्रह की दिशा में 9 पिरामिड़ों से पिरामिड दीवार बनाएं। एक कोने में व 4–4 दोनों दिशाओं में।

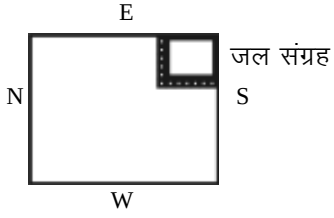

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

8. पिरामिड के अन्य उपयोग :

(a) धन की तिजोरी के ऊपर पिरामिड रखने से धन की वृद्धि होती है।
(b) ईशान कोण में लकड़ी के पिरामिड के नीचे बैठने से पूजा में मन लगता है।
(c) लकड़ी के पिरामिड के नीचे बैठ कर पढ़ने व कार्य करने से थकावट नहीं होती व कार्य में मन लगता है।
(d) पिरामिड कैप (पगड़ी) पहनने से सिरदर्द में आराम, स्वास्थ्य में सुधार व पढ़ाई में मन लगता है।
(e) नैऋत्य कोण में लकड़ी के पिरामिड के नीचे बैठने या सोने से कई रोगों से मुक्ति मिलती है।
(f) मेरू श्री यंत्र (पिरामिड रूपी लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र) की पूजा करने से धन की वृद्धि होती है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

अध्याय–7

दर्पण द्वारा वास्तु दोष निवारण

1. कटाव संबंधी दोष : उत्तर, पूर्व या ईशान कोण में कटाव संबंधी दोषों को दूर करने के लिए दर्पण का उपयोग बहुत कारगर सिद्ध होते हैं।

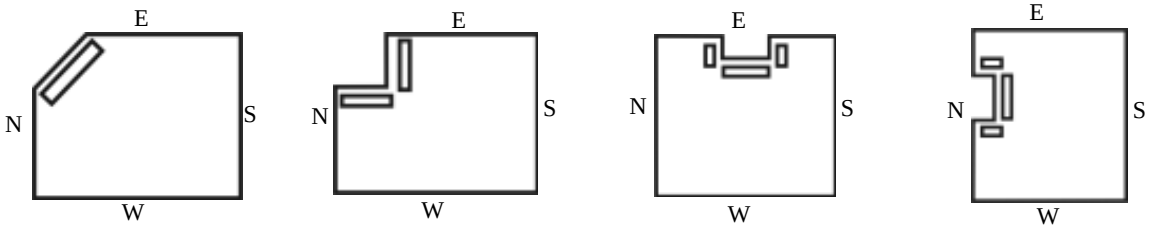

2. मंदिर गलत दिशा में : किसी वस्तु या कक्ष के गलत दिशा में होने पर उसके दोष को दूर करने के लिए भी दर्पण का प्रयोग किया जाता है। यदि किसी का मन्दिर आग्नेय या वायव्य कोण में है तो उसे ईशान में दर्शाने के लिए पूर्वी ईशान व उत्तरी ईशान में दर्पण लगाना चाहिए।

3. जल गलत दिशा में : यदि किसी के शौचालय में नल आग्नेय कोण में लगा है तो उस दोष को दूर करने के लिए उत्तरी ईशान में दर्पण लगाएं।

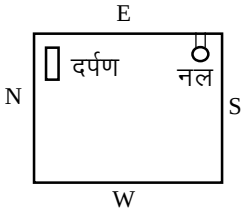

4. दर्पण गलत दिशा में : दर्पण को बेड रूम में कभी भी इस प्रकार न लगाए जिससे सोते समय आपके शरीर का कोई भाग उसमें दिखाई दे। यदि कोई ऐसा दर्पण लगा है तो उसे सोते समय कपड़ें से ढ़क देना चाहिए।

5. छोटी जगह को बड़ा दिखाना : यदि आप किसी छोटे कक्ष, दुकान या ऑफिस को बड़ा दिखाना चाहते हैं तो उसके पूर्व या उत्तर दिशा में बड़ा सा दर्पण लगाएं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com